प्रकाशकका निवेदन।

महात्मा टालस्टाय कलियुगमें उत्पन्न हुए। परन्तु वे थे सत्ययुगवादी। उन्होंने केवल शब्दोंसे सब मनुष्योंकी समता और निर्वैर प्रेमसाम्राज्यका चित्र नहीं खींचा, किन्तु वास्तवमें उनका आचरण ऐसा हुआ है। इस आचरणका वृत्तान्त हमारे श्रद्धेय मित्र प० रामनारायणजी मिश्रने लिखकर इस पुस्तिकाके साथ जोड़नेकी आज्ञा दी है जिस कृपाके लिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। महात्माजीके जो लेख इसमें प्रकाशित हुए हैं वे उनके लेखोंके नवनीत ही समझे जाने योग्य हैं और हमे आशा है कि पाठक इस नवीन और अद्भुत सृष्टिको देखकर मनोरञ्जनके साथ कुछ पारमार्थिक लाभ भी उठावेंगे। यदि हो सका तो हम उनके और लेखोंको भी शीघ्र ही प्रकाशित करनेकी चेष्टा करेंगे।

विनीत—

मंत्री ग्र० प्र० समिति,

काशी।

महात्मा टॉलस्टायका संक्षिप्त जीवनचरित्र *

(श्रीयुत प० रामनारायण मिश्र बी० ए० द्वारा लिखित)

टॉलस्टाय रूस देशके निवासी थे। पर वे सारे संसारके लिये उत्पन्न हुए थे। अत्यन्त देशभक्त होनेपर भी उनका प्रेम विश्वजनीन था। पृथ्वीमे जितने देश हैं और जहां पद-दलित जन-समूह दासत्वसे छुटकारा पाकर स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी चेष्टा कर रहा है उन सबसे टॉलस्टायकी सहानुभूति रहती थी। उनका ध्यान मनुष्यकी उन्नतिके केवल एक ही पगपर नहीं रहता था। वे धर्मनिरीक्षक, समाजसंशोधक, राजनीतिज्ञ, योद्धा, और तत्ववेत्ता थे। अपने विचारोंको उपन्यास, और अन्य प्रकारके निबन्धों द्वारा प्रकाशित करते थे और उन विचारोंपर स्वयं भी चलते थे। ऐसा करनेमे उनको अनेक कष्ट हुए। उनके कुटुम्बी उनसे अप्रसन्न रहते थे। राजाका क्रोध कभी कभी उचित सीमाका उल्लंघन कर जाता था, पर दृढ़प्रतिज्ञ टॉलस्टाय अपने सिद्धान्तोसे विचलित न हुए। ऐसे महानुभावका जीवनवृत्तान्त मनुष्य मात्रके लिये शिक्षाप्रद है, विशेषकर हमारे देशके लिये कि जो प्रायः उन्हीं दुःखोसे पीडित है कि जिनके दूर करनेके लिये यह महात्मा अपना तन, मन, धन लगाते थे।

---

* यह लेख 'नवजीवन' के वर्ष १९६८ मास चैत्रके अङ्कमे पहिले प्रकाशित हो चुका है। —लेखक।

टॉलस्टायका जन्म २८ अगस्त १८२८ ई० में यास्न्या पोलयाना नामक स्थानमे जो रूसकी प्राचीन राजधानी मॉस्कोसे प्रायः ६० कोसपर है, हुआ था। जब इनकी अवस्था ३वर्षकी थी तब ही इनकी माताका, और ९ वर्षकी अवस्थामें इनके पिताका, देहान्त हो गया। इनके कुटुम्बके मर्द सेनाविभागमें सरकारी नौकरी करते थे और उनमेंसे अनेक विख्यात योद्धा भी थे। पिताके मरनेपर इनकी चाचीने इनको पाला। यह स्त्री रात दिन संसारके सुखभोगमे लीन रहती थी। प्रति दिन उसके घर दावते हुआ करती थी, खेल तमाशे होते थे। काजान नगरमे जहां वह रहती थी, प्रति दिन भोज हुआ करते थे। टॉलस्टाय भी बाल्यावस्थामे इनमे शरीक होते थे। हंसी, दिल्लगी देखते थे। १५ वर्षकी अवस्थामें जब इनका नाम उस नगरके विश्वविद्यालयमे लिखवाया गया तो इनका पढनेमे मन नही लगता था। इन्होने विश्वविद्यालयमे भी जाकर आमोदप्रमोदके उपाय सोचे और अनेक विद्यार्थियोको अपने साथी बनाया। अब इनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। बाप दादाकी जायदाद काफ़ी थी। जमीदार थे। समझते थे कि चिन्ता काहेकी है। पढना लिखना रुपया कमानेके लिये है। रुपयोका अभाव तो था ही नही। प्रतिष्ठा धनसे होती है। सोचा कि चलकर अपनी जमींदारीमे रहें। पढ़ना लिखना छोड़ जमीदार हुए। कभी कभी काश्तकारोकी अवस्था देख दया आती, परन्तु खेल कूदसे फ़ुरसत कहाँ? कभी शिकारको निकल गये, कभी महीनो जुआ ही हो रहा है। नाच देखना विशेष प्रिय था। फल यह हुआ कि आमदनीसे ज्यादः

खर्च होने लगा। ऋण बढ़ गया। घर रहना कठिन हो गया। काकेशस पर्वतपर भागे और वहां एकान्तमे एक कुटि बनाकर रहने लगे। २३ वर्षका अवस्थामे सेनाविभागमे नौकरी कर ली। कुछ लिखना पढ़ना भी आरम्भ किया। इसी समय क्रिमियन महायुद्ध आरम्भ हुआ। उन्होंने अपने देशकी ओरसे विना वेतन स्वेच्छाचारी सैनिक होकर लड़ना आरम्भ किया। लनड़ेमे इतनी दक्षता दिखलायी कि सेवैस्टोपोलके पहाडी गढ़की सेनाके सेनापति हो गये। इसी स्थानपर इन्होंने सेवैस्टोपोलकी लड़ाईकी कहानियां लिखी। इस पुस्तकका विलक्षण प्रभाव पड़ा। राजाकी आज्ञा हुई कि इनका लडाईसे छुटकारा करके इनसे प्रार्थना की जाय कि युद्धका एक बृहत् वृत्तान्त लिखे। इस वीचमे ये रूसकी राजधानी सेटपीटर्सबर्ग (अव पेट्रोग्रॉड) पहुंचे, जहां इनका अत्यन्त मनोहर स्वागत हुआ। सव प्रकारके स्त्रीपुरुष इनके दर्शनोको आये। नगरमे वड़ा ज़ोश था। जिधर देखिये, इन्हींकी चर्चा थी। कहां तो एकान्तवास करनेकी इच्छा थी और कहां देशके नेता हो गये। थोड़े दिनोंसे टॉलस्टायने फ्रान्स देशके विख्यात लेखक, सुधारक और तत्ववेत्ता Rousseau रूसोके ग्रन्थोका अवलोकन आरम्भ किया था। रूसोके ग्रन्थ विलक्षण हैं। इनमे स्वतन्त्रता और उन्नतिके मूलमन्त्र लिखे हैं। इनमे शिक्षाके प्रचारका उपदेश है। टॉलस्टायके जीवनके आदर्शको इन ग्रन्थोने वदल दिया। टॉलस्टायने जो पुस्तके लिखी है उनपर रूसोके उपदेशोका स्पष्ट प्रभाव मालूम होता है। इन दिनो रूस देशमे गुलामीकी प्रथा थी। ज़मींदार काश्तकारोसे वेगारीका काम लेते थे।

कामके वदलेमें कुछ वेतन नहीं देते थे। इस दुर्दशाको टॉल्स्टायने देशके लिये श्रेयस्कर नहीं समझा। उन्होंने इसी विषयपर उपन्यास लिखने आरम्भ किये। स्वयं अपनी जमींदारीमे कृषिकारोंसे सुन्दर व्योहार आरम्भ किया। उनके लिये पाठशालाएँ खोलीं। स्वयं उनमे इंजीलका गाना, इतिहास इत्यादि पढ़ाना आरम्भ किया। एक पाठशालामे सफलता होनेपर कई और पाठशालाएँ खोलीं। चारो तरफसे लोगोने विरोध करना आरम्भ किया। लोग कहने लगे, सव लोग पढ़ जायंगे तो खेती कौन करेगा, मज़दूर कहांसे मिलेंगे। टॉलस्टायका मत था कि प्रत्येक बालक, चाहे वह किसी अवस्थामे उत्पन्न हुआ हो, शिक्षा प्राप्त करनेका अधिकारी है। राजा और धनाढ्य लोगोका कर्तव्य है कि वे जातिके वालकोकी शिक्षाका प्रवन्ध करे। मनुष्यमात्रके लिये जैसे नग्न अवस्थाको ढंकनेके लिये वस्त्रकी आवश्यकता है उसी प्रकार, उसको अपनी अज्ञताको दूर करनेके लिये विद्या प्राप्त करनेकी आवश्यकता है। परन्तु अपने मतके प्रचार करनेमे वे अकेले ही थे। लाचार होकर उनको अपने खोले हुए स्कूल वन्द करने पड़े। परन्तु उनका यह मत दृढ़ होता गया कि उच्च श्रेणीके धनाढ्य पुरुप उन लोगोकी ओर अपना कोई कर्तव्य नहीं समझते जो निर्धन होनेके कारण उनके अधीन है। इस समय उन्होंने जो उपन्यास लिखे वे इसी मतका प्रतिपादन करते है। इन ग्रन्थोका वड़ा आदर हुआ। योरपकी अनेक भाषाओंसे उनके अनुवाद हुए। परन्तु इन ग्रन्थोंके कारण उनको राजा और जमींदारोंकी तरफसे वहुत कष्ट भी पहुंचाये

गये। उनकी पुस्तकोंका छापना बन्द किया गया। उनके मित्रोको दन्ड दिया गया जिसमे उनके साथ देनेवाले कम हो जायँ। उनकी चिठ्ठियां चोरीसे पढ़ी जाने लगीं। उनके पीछे डिटेक्टिव छोड़े जाने लगे। इसके पूर्व उनका विवाह हो चुका था। अब उनके मनमे समाई कि धन और जायदाद एक व्याधि है। चारोतरफ लोग-दु खी है। सैकड़ो स्त्री-पुरुष, बच्चे भूखो मरते है। हमको यह अधिकार नहीं कि हम तो धनवान हो और ऐसे भोजन खायँ और ऐसे वस्त्र पहने कि जो मनुष्य-जीवनके निर्वाहके लिये अत्यावश्यक नही और हमारे चारो ओर ऐसे लोग हो कि जिनको शरीर-रक्षाके निमित्त आवश्यक भोजन और वस्त्र भी न मिले। इसी विचार-से उन्होने यह ठानी कि अपनी सब सम्पत्ति सर्वसाधारणको बांट दे। यह सुनकर उनकी स्त्री और बच्चे बड़े घबराये और उन्होंने न्यायालयकी शरण लेनेका विचार किया। इससे टॉ-लस्टाय दब गये और जो कुछ था अपने कुटुम्बको दे आप निर्धनकी नाई रहने लगे। एक कुटि बनाली। स्वय खेती करने लगे। मांस-भोजन परित्याग किया। जो मिल जाता खा लेते और पहन लेते। किसी प्रकारका व्यसन नहीं रक्खा। खेती करना और पुस्तके लिखना। सं० १८८० ई० मे रूस देशकी मनुष्यगणना हुई। उसमे इनको भी कुछ काम मिला। इस कामके करनेमे इन्होंने सर्वसाधारणकी सामाजिक और आर्थिक अवस्थाकी खूब जांचपडताल की। इस समयकी उनकी जो पुस्तके है उनमे सर्वसाधारणकी अवस्थाका वहुत अच्छा वर्णन है। उनकी पुस्तके प्राय कहानियोके रूपमे होती थीं। वहुतसी

कहानियां उन्होने शरावकी बुराइयोंके वर्णनमे लिखीं। इसके कुछ वर्षोके अनन्तर रूस देशमे बड़ा अकाल पड़ा। उस समय टॉलस्टायकी दीनवत्सलताको जिन लोगोने अपने आंखोसे देखा था उनका लिखा हुआ वर्णन पढ़कर महान् पुरुषोके उच्च लक्षणोका अनुभव होता है। टॉलस्टाय और उनके कुटुम्बी मिलकर दीनोको अपने हाथसे खिलाते थे और वस्त्र पहनाते थे। अपनी ज़मीन्दारीकी सारी आय उन्होने ग़रीबोंको अर्पण करनी आरम्भ की। स्वय भी वही भोजन खाते कि जो कंगालोको खिलाते। टॉलस्टायके धार्मिक भावका उज्ज्वल रूपसे प्रादुर्भाव तब होता था कि जब वे दुःखित, पीडित, पद दलित लोगोको देखते थे। उस समय उनके चित्तमे ऐसे लोगोके लिये दया, और जिनके कारण ससारमे दुःख, पीड़ा और अन्याय फैलता है उनके लिये अत्यन्त क्रोध उत्पन्न होता था। ऐसे धार्मिक भावोका वर्णन करनेमे टॉलस्टायकी लेखनी बडी प्रभावशाली हो जाती थी। उनके वाक्य अद्भुत आदर्शोंका परिचय देते थे। अब टॉलस्टायके चित्तमे वानप्रस्थाश्रममे प्रवेश करनेकी इच्छा हुई। परन्तु इसमे कई कठिनाइयां प्रतीत हुईं। घरवालोका झगडा, लोगोका मिन्नत करना और समझाना कि घर बैठे ही संसार त्यागा जा सकता है, जल्दी क्या है, आवश्यकता क्या है इत्यादि। इस समयका लिखा हुआ एक पत्र जो इन्होने अपनी स्त्रीके नाम लिखा था अब प्रकाशित किया गया है, उसमे उन्होने, अन्य वातोके अतिरिक्त यह वाक्य लिखा है, "मुख्य वात यह है कि प्राचीन आर्योंकी नाईं जो ६० वर्षकी अवस्थाके निकट जंगलमे चले

जाते थे और सच्चे धार्मिक पुरुषोंके समान अपना अन्तिम समय ईश्वरकी आराधनामें विताते थे न कि खेल, और गप्पोंमे, मेरी भी अपने ८० वे वर्षमे यह प्रवल इच्छा है कि मुझे शान्ति प्राप्त हो; एकान्त मिले और मेरे जीवनके कार्य और मेरे विश्वासमे एकता हो "।

कई वर्षोंके कोलाहलके पीछे अन्तमे उन्होने घर छोड़ ही दिया। ८२ वर्षकी अवस्थामे पीठपर एक गठड़ी डाली और जंगलकी राह ली। गठड़ीमे दो तीन आवश्यक चीजे थी। परन्तु घर छोडे थोड़े ही दिन हुए थे कि एक सरायमे उनका ज्वर आया। यह समाचार पाते ही उनके घरके लोग उनके पास पहुंचे, तुरन्त ही उनका देहान्त हो गया। घरवालोंकी ओर देखकर उन्होंने कहा कि, "संसारमे अनेक दुःखी पड़े हैं, उनके पास क्यो नही जाते और उनसे सहानुभूति क्यो नहीं प्रगट करते?" ये ही उनके अन्तिम वाक्य थे। संसारभरमें मृत्युके समाचार पहुंचे। जिस स्थानका नाम भी लोग नही जानते थे, वहाँ सहस्रो आदमियोकी भीड़ इनके दर्शनोको पहुंचने लगी। तारपर तार आने जाने लगे। इस प्रकार गत नवम्बर माससे संसारका एक विलक्षण पुरुष मनुष्य शरीरके कर्तव्योका अद्भुत उदाहरण हस लोगोको देकर चल वसा। इनका जीवन चरित्र सिद्ध करता है कि प्राचीन आर्य्योंके सिद्धान्त इस समयमे भी कार्य्यमे परिणत हो सकते है। टॉलस्टायको आर्य सिद्धान्तोसे प्रेम था। वे गीता और उपानिषदोका पाठ किया करते थे। आर्य-ग्रन्थोके पढ़नेका उपदेश संसारी मात्रको दिया करते थे। उन्हे भारतवा-

सियोंसे प्रेम था। उनके दुःखसे दुखी और उनके सुखसे सुखी होते थे। उन्हे ईसाई धर्ममे विश्वास नहीं था। ईसाको वे एक महापुरुष मानते थे, परन्तु ईश्वरका लड़का नही। उनका सिद्धान्त था कि हमारा दैनिक जीवन ऐसा होना चाहिये कि हमलोग सर्वदा ईश्वरकी इच्छाके अनुसार चले। मन्दिरों और गिरजाघरोंमें ईश्वर नहीं मिलता। यह कहा करते थे कि जब कभी अच्छे काम करते हुए कोई सताया जाय तो उसको बरदाश्त करना चाहिये। बुरे आदमियोका सामना नहीं करना चाहिये परन्तु अपने सिद्धान्तोंपर दृढ़ रहना चाहिये।
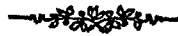
लोग नशा क्यों करते हैं ? ❀
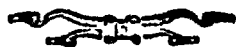
(१)

लोग भांग, गांजा, शराब, अफीम और तम्बाकू आदि होश गँवानेवाली वस्तुएँ क्यों पीते है ? यह होश गँवानेकी आदत कैसे शुरू हुई ? इतनी तेज़ीसे यह चारों ओर कैसे फैल गयी ? और अब भी यह सुशिक्षित तथा अशिक्षित दोनों समाजोंमें क्यों फैल रही है ? यह कैसी बात है कि जहा शराब, वोडका (Vodka) या बीयर (Beer) नहीं, वहां भाँग, गांजा और अफीमका ही विशेष प्रचार है ? और तम्बाकूका क्या कहना है—इसका तो सारे संसारमें रंग जमा है !

लोगोंकी यह कैसी रुचि है कि वे अपनेको ही बेहोश करना चाहते हैं ?

किसी मनुष्यसे पूछिये:—" तुम शराब क्यों पीने लगे ? और अब क्यों पीते हो ? " वह यही उत्तर देगा:—' वाह ! यह क्याही अच्छी चीज़ है; और मैं क्या—सभी कोई पीते हैं ! ' और वह यह भी कहनेमें न चूकेगा कि ' शराब पीनेसे मुझे बड़ा आनन्द मिलता है । ' ऐसे भी बहुतसे शराबी

❀ महात्मा टाल्स्टायके ' Why do men stupefy themselves ? ' शीर्षक लेखका हिन्दी भावानुवाद ।

मिलेंगे, जिन्होंने शराबके गुणदोषोंपर विचार करनेका एकबार भी कष्ट न उठाया होगा, पर जो पूछनेपर बेखटके कह देंगे कि शराब स्वास्थ्य-रक्षाके लिये बड़ी उपयोगी चीज़ है; और शक्तिवर्द्धक भी है। सारांश, नशेबाज़ नशेके विषयमे योंही बेसिरपैरकी बाते किया करते हैं।

यदि किसी तम्बाकू पीनेवालेसे पूछा जाय कि 'तुम तम्बाकू क्यों पीने लगे और अब क्यों पीते हो ?' तो वह भी यही उत्तर देगा कि 'समय बितानेके लिये, मन बहलानेके लिये; और मैं क्या—सभी लोग पीते हैं'।

बस, इसी तरहके उत्तर प्रायः वे लोग भी देंगे जो भांग, गांजा या अफीम पीते हैं।

समय बितानेके लिये, मन बहलानेके लिये, मौज उड़ानेके लिये या सब लोग करते हैं इसलिये कोई खेल खेलना, सीटी या बांसुरी बजाना, मनही मन अलापना या ऐसा ही कोई और काम करना क्षम्य हो सकता है, जिसमे प्राकृतिक सम्पत्तिका दुरुपयोग न हो, बड़े परिश्रमसे तैयार की हुई वस्तुओंका अपव्यय न हो, और अपनी तथा दूसरोंकी हानि न हो। शराब, भांग, गांजा, अफ़ीम और तम्बाकूके तैयार करनेमे लाखों मनुष्योंकी मिहनत मजदूरी खर्च होती है, और करोड़ो एकड़ उपजाऊ जमीन आलू, भांग, गांजा, पोस्ता, अंगूर और तम्बाकूके बोनेमे लगायी जाती है। इसके सिवा, इन हानिकर वस्तुओंके सेवनसे लोगोंको अनेक आपत्तियाँ झेलनी पड़ती हैं। लड़ाइयों और संक्रामक रोगोंसे जितने लोग मरते हैं उनसे कहीं अधिक लोग इन नशीली वस्तुओंका सेवन कर अपने जीवनसे

हाथ धो बैठते हैं । ये सब बातें नशेबाज़ लोग भली भाँति जानते हैं और स्वीकार भी करते हैं; फिर यह कैसे माना जा सकता है कि लोग केवल समय बितानेके लिये, मन बहलाने के लिये या मौज उड़ानेके लिये ही नशा करते हैं ?

इसका और ही कोई कारण होना चाहिये ।

हर समय और हर जगह देखा जाता है कि लोग अपने बालबच्चोंको बहुत प्यार करते हैं और उनकी भलाईके लिये सब तरहका स्वार्थत्याग करनेको भी तैयार रहते हैं; परन्तु शराब, भांग, गाजा, अफीम या तम्बाकूमें वे इतना खर्च कर डालते हैं कि जितने खर्चसे वे अपने प्यारे भूखे बालबच्चोंको मज़ेमें खिला सकते हैं—या कमसे कम उन्हें उनकी तकलीफ़से बचा सकते हैं । अपने बच्चोंको भूखे छोड़कर नशा करनेवालोंके उदाहरण अगर हमारे सामने मौजूद हैं तो निश्चय जानिये कि 'समय बिताना' या 'मन बहलाना' ये सब नशा करनेके ठीक ठीक कारण नहीं, किन्तु इसका और ही कोई बड़ा और जबर्दस्त कारण है ।

इस विषयकी पुस्तकें पढ़कर, नशेबाजोंको देखकर, और मुख्यतः अपनी उस दशापर विचार करके, जबकि मैं स्वयं तम्बाकू और शराब पीता था, जो कारण मैंने मालूम किया है वह निम्नलिखित पंक्तियोंमें बतलाया जाता है ।

प्रत्येक मनुष्य अपने जीवनमें दो परस्परविरोधी शक्तियों-को अनुभव करता है। एक शक्ति दृष्टिहीन और शरीरसे सम्बन्ध रखनेवाली है । दूसरी शक्ति आत्मिक है और उसका काम सदसत्को पहिचानना है । यह दृष्टिहीन शक्ति किसी

मशीनकी तरह आहार, निद्रा, भय, मैथुनादि क्रियाओंको सम्पन्न करती है । सदसत्की परीक्षा करनेवाली आत्मिक शक्ति इस मशीनकी तरह काम करनेवाली पाशविक शक्तिसे संयुक्त रहती है; परन्तु स्वयं कोई काम नहीं करती, केवल उस शरीर-सम्बन्धिनी शक्तिकी कार्यावलीका निरीक्षण करती हुई सत्यासत्यकी परीक्षा करती है । जबतक शरीरसम्बन्धिनी शक्तिका काम आत्मिक शक्तिके अनुकूल होता है तबतक दोनों शक्तियाँ परस्पर अविभिन्न भावसे सलग्न रहती हैं; पर जब पाहिलीका काम दूसरीके अनुकूल नहीं होता तब आत्मिक शक्ति शरीर-सम्बन्धिनीका साथ छोड़ देती है ।

दिशादर्शक यन्त्रके काँटेपर, कल्पना कीजिये कि, उसी काँटेके रङ्ग, कद, और शकलका दूसरा काँटा लगा दिया गया है । अब ये काँटे एक दूसरेसे अलग नहीं मालूम हो सकते—दोनोंका अविभिन्न रूप रहता है—जबतक वे एक ही दिशाको दिखा रहे है; परन्तु ज्योंही ऊपरका काँटा दूसरी दिशामें घूम जायगा, त्योंही नीचेका काँटा प्रकट होगा—इस तरह दोनों काँटे अलग अलग मालूम होंगे ।

उसी प्रकार निरीक्षण करनेवाली आत्मिक शक्ति, जिसकी प्रतीतिको हम प्रायः विवेक-बुद्धि कहते हैं, हमेशा सुमार्ग और कुमार्ग दिखाया करती है; और जबतक हम उसके दिखलाये हुए मार्गपर—कुमार्गसे सुमार्गपर—चलते रहते हैं तबतक हम उसे मालूम नहीं करते । परन्तु विवेक-बुद्धिके विरुद्ध कुछ काम करनेहीसे वह हमपर प्रकट हो जाती है और हमें बतला देती है कि दृष्टिहीन पाशविक

शक्ति विवेक-बुद्धिसे कैसे अलग हुई। उसी प्रकार मान लीजिये कि, एक मल्लाह अपनी नांवको भूलसे किसी दूसरी ही राह-पर ले गया है, और अब उसे अपनी भूल मालूम हो गयी है। इस अवस्थामें वह क्या करेगा ? या तो वह दिशादर्शक यन्त्रसे अपनी राहका पता लगा कर तब नांव खेएगा या अपनी भूलकी ओर आनाकानी करके आगे ही बढ़ता जायगा। हर एक मनुष्य, जिसे अपनी आत्मिक-शक्ति और पाशविक शक्तिका विरोध मालूम हो गया हो, तभी अपना काम कर सकता है जब या तो वह उस कामको अपनी विवेक-बुद्धिके अनुकूल करले या अपनी पाशविक शक्तिकी गलतीको अपने दिमागसे ही हटा दे।

मनुष्यमात्रके जीवनमें ये ही दो क्रियाएं होती हैं:— (१) अपने कार्योंको विवेकबुद्धिके अनुकूल कर लेना, या (२) विवेकबुद्धिकी आज्ञाको अपनेसे छिपाना, जिसमें काम बराबर जारी रहे।

कुछ लोग पहिलीका अवलम्ब करते हैं और कुछ दूसरीका। पहिली क्रियाका अवलम्ब करनेके लिये एकही साधन है—विवेकबुद्धिका विकास। दूसरीके लिये दो साधन हैं—एक बाहरी और दूसरा भीतरी। बाहरी साधनमें वे बातें सम्मिलित हैं जो मनुष्यका ध्यान उसकी विवेकबुद्धिकी आज्ञा-परसे हटा सकें; और भीतरी साधन वह है जो विवेकबुद्धिको ही कुन्द कर दे।

मनुष्य अपने सामनेकी वस्तुको दो ही प्रकारसे नहीं देख सकता—या तो अपनी दृष्टि किसी दूसरी अधिक चित्ताकर्षक

वस्तुकी ओर फेरकर, या अपनी आंखोंकी रोशनीमें ही बाधा उत्पन्न कर। उसी प्रकार मनुष्य केवल दो ही प्रकारसे विवेक-बुद्धिकी आज्ञाको टाल सकता है—या तो खेल, तमाशे जैसे अन्यान्य बातोंकी ओर अपना ध्यान फेरनेके बाहरी साधनसे; या बुद्धिके कार्यमें ही बाधा उत्पन्न करनेके भीतरी साधनसे। विवेक-बुद्धिकी आज्ञा टालनेके लिये इन बाहरी साधनोंसे उन लोगोंका प्रायः काम चल सकता है जो विचार नहीं कर सकते; परन्तु जो लोग कुछ भी विचार कर सकते हैं उनको ये साधन कुछ भी काम नहीं दे सकते।

'मनुष्यके जीवन और उसकी विवेक-बुद्धिकी आज्ञामें जो भेद-भाव होता है उसके ज्ञानसे बाहरी साधनोंके द्वारा मनुष्यका ध्यान पूरी तौरसे नहीं हटाया जा सकता। यह ज्ञान मनुष्यके जीवनको जकड़ डालता है। और लोगोंको अपना जीवन उसी प्रकार स्वतन्त्रताके साथ बितानेके लिये नशेली चीजोंसे विवेक-बुद्धिको कुन्द करनेवाले उसी विश्वसनीय भीतरी साधनकी शरण लेनी पड़ती है।'

विवेक-बुद्धिकी आज्ञाका पालन नहीं हो रहा है, और साथही इतनी शक्ति भी नहीं है कि अपने इस दुर्देशाग्रस्त जीवनको सुधारे। ऐसी अवस्थामें मनुष्य क्या करता है? विवेकबुद्धि उसे बतलाती है कि यह काम बुरा है; पर वह अपनी आंख फेर लेनेकी चेष्टा करता है। अबतक जिस साधनसे इस प्रकार विवेकबुद्धिको दबा देनेकी चेष्टा हुआ करती थी वह साधन शिथिल हो जाता है—उसमें इतनी सामर्थ्य नहीं रहती कि बराबर विवेकबुद्धिको दबाता रहे, इसलिये—

अर्थात् पहिलेकी तरह मौजके साथ रहने और उस विवेक-रूपी बाधाको दूर करनेके लिये जो बुरा काम करते हुए फौरन् हाथ पकड़ लेती है—मनुष्य ऐसा उपाय करता है कि विवेक-बुद्धि ही निकम्मी हो जाय, ठीक वैसे ही जैसे कोई मनुष्य अपनी आखें ही बन्द करके अपनी ध्येय वस्तुके दर्शनसे बचता है—(याने थोड़ा नशा कर लेता है)।

(२)

संसारमें नशेली चीजोंकी जो इतनी खपत है उसका यह कारण नहीं कि, उनमें कोई विशेष स्वाद हो वा उनसे कुछ आनन्द मिलता या दिल बहलता हो, किन्तु उसका यह कारण है कि मनुष्यको अपनी विवेकबुद्धिकी आज्ञाकी ओर आनाकानी करनेमें इनकी आवश्यकता पड़ती है।

एक दिनकी बात है कि मैं एक गलीसे जा रहा था; और उसी गलीसे कुछ एक्केवान भी आपसमें बात करते हुए गुजर रहे थे। मैने उनमेंसे एकके मुहँ यह सुना:—"सचमुच, मनुष्य जब होशमें रहता है या कोई नशा किये नहीं रहता तब वह खराब काम करनेमें शरमाता है।"

मनुष्य जब होशमें रहता है या नशेमें चूर नहीं रहता तब वह उस कामको करनेमें शरमाता है जिसे वह नशेकी हालतमें बहुत ठीक समझता है। लोग नशा क्यों करते हैं ? इस प्रश्नका उत्तर इसी एक वाक्यमें है। लोग या तो विवेक-बुद्धिके विरुद्ध काम करनेके पश्चात् होनेवाली लज्जासे बचनेके लिये नशा करते हैं या पहिलेसे ही अपनेमें विवेकविरुद्ध काम करनेकी धृष्टता लानेके लिये।

मनुष्य जब कोई नशा किये नहीं रहता तब वह वेश्याके घर जानेमें, चोरी करनेमें, अथवा किसीकी हत्या करनेमें शरमाता है; परन्तु वही मनुष्य नशा कर लेनेपर ये सब काम बेखटके कर सकता है। मनुष्य जब कोई बुरा काम करना चाहता है तब उसकी विवेकबुद्धि उसे सचेत कर देती है कि यह तुम बुरा काम करना चाहते हो; इसी बातको भुला देनेके लिये वह नशा करके बेहोश बन जाता है।

मुझे याद है कि एक बवर्चीका इजहार सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ था। उसपर मेरी एक रिश्तेदारिनके खून करनेका अभियोग था। वह एक बुढ्ढी औरत थी और उसीका वह बवर्ची था। उसने अपने इजहारमें कहा:—"जब मैंने अपनी सुरैतिनको (उस बुढ्ढी औरतकी बांदीको) घरके बाहर भेज दिया और वह काम करनेका—खून करनेका—समय आ पहुँचा तब हाथमें छुरा ले अपनी मालकिनके कमरेमें जाना चाहा, परन्तु मैंने सोचा कि जबतक मैं होशमें रहूंगा या नशा करके बेहोश न हो लूंगा तबतक विचारे हुए कामको न कर सकूँगा।" यहां भी वही बात—"जबतक मनुष्य नशा करके बेहोश नहीं हो जाता तबतक वह खराब करनेमें शरमाता है।" वह फौरन् लौट गया और दो गिलास शराब पी कर खून करनेको तैयार हो गया और उसने वह कर भी डाला।

सौमें नब्बे गुनाह प्रायः इसी तरह किये जाते हैं। और लोग कहते हैं:—"शराब पीनेसे हिम्मत बढ़ती है।"

सौमें पचास स्त्रियां नशेके जोशमें ही मारी जाती हैं। वेश्याके घर जानेवाले प्रायः सभी पुरुष नशेबाज होते हैं।

शराबसे विवेकबुद्धिपर पर्दा डालनेकी बड़ी विलक्षण योग्यता है, इस बातको लोग खूब जानते हैं और जानबूझकर इसी कामके लिये नशा करते हैं।

लोग, केवल अपनी ही विवेकबुद्धिपर पर्दा डालनेके लिये नशा नहीं करते, किन्तु जब वे औरोंसे उनके विवेकविरुद्ध काम लेना चाहते हैं तो उन्हे भी वे नशा करा देते हैं। घमासान युद्ध करनेके पेश्तर सिपाहियोंको प्रायः नशा कराया जाता है। "सबस्तोपोल" पर हल्ला करनेसे पेश्तर सारेके सारे फ्रेंच सिपाहियोंको शराब पिलायी गयी थी। जब कोई शहर या किला जीत लिया जाता है और सिपाही उसे लूटने और असहाय बुड्ढों तथा बच्चोंकी कतल करनेसे साफ़ इन्कार कर जाते हैं तब उन्हे प्रायः शराब पीनेकी आज्ञा दी जाती है; और फिर उनसे मनमाने अत्याचार कराये जाते हैं।

खराब काम करनेपर जब विवेकबुद्धिको कष्ट होने लगते हैं तब उन कष्टोंसे बचनेके लिये लोग प्रायः नशा करते है; ऐसे उदाहरण तो बहुत लोग जानते हैं। औरोंकी अपेक्षा दुराचारी लोग ही नशीली चीजोंके अधिक वशमें रहते हैं, इस बातको भी चाहे जो मनुष्य मालूम कर सकता है। चोर, डाकू, और वेश्याएं बिना नशा किये रह नही सकतीं।

प्रत्येक मनुष्य जानता है और स्वीकार भी करता है कि मानसिक कष्टोंसे (विवेकबुद्धिको होनेवाले कष्टोंसे) बचनेके लिये ही नशा किया जाता है और विवेकविरुद्ध दुराचारी जीवन बितानेमें इन्हीं नशीली चीजोंसे सहायता ली जाती है।

इस बातको भी लोग खूब जानते हैं कि नशा करनेसे विवेक-बुद्धि निकम्मी होती है। या यों कहिये कि शराब पीया हुआ मनुष्य उसके नशेमें वह काम कर बैठता है जिसके करनेका विचार भी वह होशमें रहकर—बिना नशा किये—नहीं कर सकता।

इस विषयमें किसीका मतभेद नहीं। परन्तु जब लोग देखते हैं कि नशा करके किसीने किसीकी चोरी की न किसीका खून किया अथवा कोई उत्पात ही मचाया, या जब वे देखते हैं कि ऐसे लोग—जो कानूनके पाबन्द और भले आदमी समझे जाते हैं ऐसे लोग—जब नशा करते हैं, उसी प्रकार जब वे देखते हैं कि लोग बहुत सी शराब या बहुत सी तम्बाकू एकदम नहीं पी जाते बल्कि थोड़ी थोड़ी पीया करते हैं, तब उनकी यह धारणा होती है कि नशेसे कुछ विवेकबुद्धि भ्रष्ट नहीं होती।

यही कारण है कि रशियन लोग भोजनके साथ 'वोडका' नामकी शराब पीना गुणकारी समझकर एक टमलर शराब चढ़ा जाते हैं। फ्रेंच लोग 'एबिसेन्थी' नामकी शराब पीते हैं। जरमन लोग 'बीयर' ढकोसते हैं। अंग्रेज लोग पोर्टर पीते हैं। और चीनी लोग अफीम खाते हैं और ऊपरसे ये सारेके सारे तम्बाकू भी पीते हैं। लोग समझते हैं कि यह नशा केवल आनन्दके लिये किया जाता है, इसका विवेकबुद्धिपर कुछ भी असर नहीं होता।

लोगोंका यह ख्याल है कि जिन लोगोंको नशा करनेकी आदत पड़ गयी है वे लोग यदि नशा करके चोरी, डकैती, या खूनखराबी नहीं करते तो उनके सामान्य अशिष्ट व्यवहारोंको

नशेका परिणाम बतलाना युक्तियुक्त नहीं; क्योंकि यदि उनको ऐसे व्यवहारोंकी आदत पड़ गयी है तो क्या नशा करने पर और क्या न करनेपर स्वभावतः ही वे ऐसे व्यवहार करेंगे। यह भी कहा जाता है कि यदि ये लोग कानूनके खिलाफ कोई काम नहीं करते तो इन्हे इनकी विवेकबुद्धिकी आवाजको दबानेकी जरूरत ही नहीं है। और जिन्हे नशा करनेकी आदत पड़ गयी है उनका जीवन कुछ बुरा मालूम होता है; और यदि वे नशा न करते होते तो भी उनका जीवन ऐसा ही रहता। तात्पर्य, लोगोंकी यह धारणा है कि जिन्हें नशा करनेकी आदत पड़ गयी है उनकी विवेकबुद्धिपर नशा कुछ भी असर नहीं करता।

यद्यपि हर एक मनुष्य अनुभवसे जानता है कि नशा करनेपर दिमाग ठिकाने नहीं रहता, जिस कामके करनेमें वास्तवमें उसे लज्जा आनी चाहिये वह करनेमें उसे नशा करलेनेपर लज्जा नहीं आती, विवेकबुद्धिपर नशेका जरासा असर होते ही उसे और भी नशा करनेकी इच्छा होती है, नशेकी हालतमें उसके लिये अपने जीवन और स्थितिपर विचार करना कठिन हो जाता है और नियमित नशा करनेसे शरीरपर वही असर होता है जो अनियमित नशा करनेसे; तथापि—इन सब बातोंको अनुभव करते हुए भी—थोड़ी शराब और थोड़ी तम्बाकू पीनेवाले लोग यही समझते हैं कि वे विवेकबुद्धिको भ्रष्ट करनेके लिये नहीं, किन्तु केवल स्वाद और आनन्दप्राप्तिके लिये नशा करते हैं।

परन्तु, इस बातको समझनेके लिये गम्भीर और निष्पक्ष भावसे विचार करनेकी आवश्यकता है। देखिये, यदि अनि-

यमित नशा करनेवालोंकी विवेकबुद्धि नशेसे भ्रष्ट होती है तो नियमित नशा करनेवालोंपर भी नशेका वही असर पड़ना चाहिये, (पहिले तो दिमागमें कुछ तेजी मालूम होती है, पर थोड़ी देर बाद उसमें सुस्ती और कमजोरी आ जाती है) चाहे नशा कम किया जाय या अधिक । दूसरी बात यह है कि, तमाम नशेली चीजोंमे विवेक-बुद्धिको कुन्द करनेकी तासीर है, और यह तासीर उनमें हमेशा रहती है;—नशेके जोशमें जब खून-खराबियाँ, डकैती और उत्पात किये जाते है उस वक्त भी नशे-में यही तासीर रहती है; और लोग नशेमें जो गाली गलौज करते हैं या ऐसी बात सोचते या समझते हैं जो होशमें रहकर कभी सोच या समझ नहीं सकते, यह भी उस नशेकी तासीरका ही नतीजा है । और तीसरी बात यह कि, चोर, डाकू, और वेश्या-ओंको उनकी विवेकबुद्धिपर पर्दा डालने और उनके हृदयकी शान्तिके लिये यदि नशेकी जरूरत पड़ती है तो यह जरूरत उन्हें भी मालूम होनी चाहिये जो अपने विवेकविरुद्ध काम कर रहे हों, चाहे वह काम औरोंकी दृष्टिमें ठीक और इज्जतका क्यों न हो ।

तात्पर्य, नशा करनेका—चाहे वह थोड़ा हो या अधिक, नियमित हो या अनियमित, बड़े लोग करते हों वा छोटे—एक मात्र कारण यह है कि मनुष्यके जीवन-मार्ग और उसकी विवेकबुद्धिकी आज्ञामें जो विरोध पैदा हो जाता है उसे भूला देनेके लिये मनुष्यको नशेकी जरूरत पड़ती है ।

(३)

बस, यही एक कारण है कि नशेली चीजोंकी इतनी खपत

है; और आमतौरसे पीयी जानेवाली, पर सबसे अधिक नुक-सान पहुँचानेवाली तम्बाकूके फैलनेका भी यही सबब है—और कोई नहीं।

लोगोंका यह ख्याल है कि तम्बाकूसे मन प्रसन्न रहता है, दिमाग साफ़ होता है और और और आदतोंकी तरह यह भी मनको अपनी तरफ खींचती है—परन्तु यह शराबकी तरह विवेक-बुद्धिको निकम्मी नहीं करती। तम्बाकू पीनेकी विशेष इच्छा जिस हालतमें होती है उस हालतको ज़रा सावधानीसे देखिये; आपको विश्वास होगा कि शराबसे विवेकबुद्धिपर जो असर पहुँचता है वही असर तम्बाकूसे भी होता है। और जब विवेकबुद्धिको मारनेकी जरूरत पडती है तब लोग जानबूझकर बेहोश, कर-नेकी इस क्रियाको—तम्बाकूको उपयोगमें लाते हैं। यदि तम्बाकू सिर्फ दिमाग साफ रखती या मन प्रसन्न करती तो मनुष्यको उसकी तलफ इतनी न सताती। लोग यह न कहते कि 'एक बार रोटी न मिले तो न सही, पर तम्बाकू विना काम नही चल सकता;' और वास्तवमे वे रोटीसे तम्बाकूको अधिक पसन्द न करते, जैसा कि प्रायः देखा जाता है।

उस बवर्चीने, जिसने अपनी मालकिनका खून किया था, अपने इजहारमे कहा था कि, " जब मैंने अपनी मालकिनके सोनेके कमरेमें जाकर उसके गलेमें छुरा भोंक दिया तब वह जमीनपर लोट गयी और उसके गलेसे खूनकी धारा बह निकली। बस, मेरी हिम्मत जाती रही और उस समय मेरे हाथों उसका काम तमाम न हो सका। तब मै फौरन् दूसरे कमरेमें गया और वहा थोड़ी देर बैठ मैंने एक सिगेट पीयी।"

सिग्रेट-पी कर वह फिर उस शयनागारमे पहुंचा और उसने, वह काम पूरा कर डाला।

इस बातसे साफ जाहिर होता है कि उस मौकेपर जो तम्बाकू पीनेकी इच्छा उसे हुई थी वह दिमाग साफ करने या आनन्द पानेके लिये नहीं किन्तु उस शक्तिको दबानेके लिये, जो उसके विचारे हुए कामको पूरा करनेसे उसे रोक रही थी।

प्रत्येक मनुष्य यदि चाहे तो मालूम कर सकता है कि तम्बाकू पीकर निजको बेहोश बनानेकी किन किन मौकोंपर इच्छा होती है। अब मैं यह बताऊँगा कि मैं खुद कब-कब तम्बाकू पीता था, और तम्बाकू पानेकी मुझे किन किन मौकोंपर जरूरत पड़ती थी। तम्बाकू पीनेकी इच्छा मुझे प्रायः उन उन अवसरोंपर हुआ करती थी जिन जिन अवसरोंपर मेरे दिमागमें उठे हुए विचारोंको मैं भुला देना चाहता था-या उनपर विचारही करना नहीं चाहता था। जब मैं अकेला बेकार बैठा रहता था और जानता था कि मुझे कुछ काम करना चाहिये, पर काम करनेकी इच्छा न होती थी तब मैं तम्बाकू पीता हुआ बराबर घंटों बेकार बैठा रहता था। मैंने किसीके घर ठीक पांच बजे जानेका वादा किया, पर मैं और ही कहीं बहुत देरतक रह गया; और जब मुझे मेरे वादेखिलाफीकी याद आयी तब मैं तम्बाकू पीने लगा, क्योंकि मैं उसे याद रखना नहीं चाहता था। मैं जब किसी कारणवश परेशान हो जाता और किसीको भली बुरी सुनाने लगता; और मैं जानता था कि मेरा यह काम अनुचित है अतएव मुझे चुप रहना चाहिये, किन्तु अपनी बातोंका सिलसिला तोड़ना नहीं चाहता था, तब मैं

तम्बाकू पीता और दूसरेको भला बुरा सुनानेका सिलसिला जारी रखता था। मैं जुआ खेलता और जब निश्चित धनसे अधिक हार जाता तब तम्बाकू पीता था। मुझसे कोई भूल हो गयी तो अपनी भूल मुझे स्वीकार करनी चाहिये, पर जब मैं उसे अपनी भूल कहकर स्वीकार करना नहीं चाहता था, किन्तु उसे दूसरोंपर लादना चाहता था तब मैं तम्बाकू पीता, और अपनी भूल अस्वीकार कर उसे औरोंपर लादता था। मैं किसी विषयपर कुछ लिख रहा हूँ; मेरा लिखा मुझेही संतोषजनक नहीं प्रतीत होता, अतएव मेरा कर्त्तव्य है कि वह न लिखूँ; परन्तु आरम्भ किये हुए कामको समाप्त करना चाहता हूँ, इसलिये तम्बाकू पीता हूँ और लिखता जाता हूँ। मैं किसीसे किसी विषयपर वादविवाद करता हूँ, और देखता हूँ कि मैं और मेरा प्रतिपक्षी दोनो ही परस्परकी बातोंको न तो समझते हैं और न समझ ही सकते हैं; पर मैं चाहता हूँ कि अपनी बात उसे समझा दूँ—इसलिये तम्बाकू पीता हूँ और अपनी बातोंका सिलसिला जारी रखता हूँ।

और और नशेली चीजोंसे तम्बाकूमे अधिक विशेषता क्या है ? तम्बाकू पीकर बेहोश बननेमें मनुष्यको अधिक आसानी है और इससे प्रत्यक्ष रूपसे कोई नुकसान भी नहीं दीख पड़ता। इन बातोंके सिवा इसमें और एक विशेषता यह है कि मनुष्य अपने काममें खलल डालनेवाली छोटीसे छोटी बातोंका प्रतिकार करनेके लिये, जब चाहे तब और जहाँ चाहे वहां, इसे पी सकता है। अफीम, शराब और भांगके पीनेमे ऐसे सामानोंकी जरूरत पड़ती है जिन्हें मनुष्य हमेशा पास नहीं रख सकता,

किन्तु तम्बाकू पीनेमें विशेष कोई कठिनाई नहीं—केवल थोड़ीसी तम्बाकू और कुछ कागज़के टुकड़े पास रख लेनेसे काम बन जाता है। दूसरी बात यह है कि मदकचियों और शराबियोंको कभी कभी भयङ्कर विपत्तियोंसे सामना करना पड़ता है; परन्तु तम्बाकू पीनेवालेको इससे विशेष भय नहीं। इसका कारण यह है कि, अफीम, शराब और भागका नशा बहुत देर तक रहता है और तम्बाकूका उतनी देर नहीं रहता—तम्बाकू पीनेवाला अपना मन बहुत जल्द दूसरी तरफ लगा सकता है।

आप वह काम किया चाहते हैं जो आपको न करना चाहिये, इसलिये आप तम्बाकू या सिग्रेट पीते हैं और अपनेमें उस कामके करनेकी धृष्टता लानेके लिये काफी बेहोश हो जाते है। फिर थोड़ी देर बाद जब आप सचेत होते है और अच्छी तरह बोल या सोच सकते हैं तब आपको मालूम हो जाता है कि आपने वह काम किया है जो न करना चाहिये था। फिर आप एक सीग्रेट पी लेते हैं तब आपका बुरे कर्म-सम्बन्धी पश्चात्ताप कम होता है। इसके बाद अपना मन किसी और काममे लगाकर किये हुए कामको आप बिलकुल ही भूल जाते हैं।

व्यक्तिविशेषकी बात छोड़ दीजिये—सर्वसाधारण लोग जो तम्बाकू पीते हैं वह आदत होनेकी वजहसे या समय बितानेके कारण नहीं, किन्तु विवेकबुद्धिको दबानेके लिये, जिसमें वे विवेकविरुद्ध काम कर सकें या विवेकविरुद्ध काम करनेपर होनेवाले पश्चात्तापसे बच सकें।

इससे क्या यह प्रकट नहीं होता कि मनुष्यके जीवन-

क्रम और तम्बाकू पीनेकी तलफमें एक प्रकारका घनिष्ट सम्बन्ध है ?

बालक कब तम्बाकू पीने लगते हैं ? प्राय: तभी, जब उनकी निर्दोष बाल्यावस्था समाप्त हो जाती है । यह कैसी बात है कि मनुष्यमे जब कुछ अधिक नीतिमत्ता आ जाती है तब वह तम्बाकू पीना छोड़ देता है और बुरे फेलोंमें पड़ते ही फिर तम्बाकू पीने लगता है ? प्राय: सभी जुआरी तम्बाकू क्यों पीते हैं ? नियमित जीवन बितानेवाली स्त्रियाँ तम्बाकू क्यों नहीं पीतीं ? क्यों वेश्याएं और पागल तम्बाकू पीते हैं ? आदत तो है ही, किन्तु इसका असल कारण विवेकबुद्धिको मारनेकी इच्छा ही है । इसी उद्देश्यसे वह पीयी जाती है और वह पीकर उद्देश्य-पूर्त्ति भी तुरन्त होती है ।

प्राय: प्रत्येक तम्बाकू पीनेवाले मनुष्यकी हालत देखकर आप मालूम कर सकते हैं कि तम्बाकू विवेक-बुद्धिको कहाँ-तक दबा सकती है ? मनुष्य जबतक तम्बाकू नहीं पीता तब-तक तो वह स्वयं भी समाजके अत्यावश्यक नियमोंका पालन करता है और चाहता है कि दूसरे भी वैसा ही करें; परन्तु जब तम्बाकू पीने लगता है तब उन नियमोंको भूलकर उनके विरुद्ध काम करने लगता है । साधारण लिखे पढ़े लोग भी तम्बाकू पीना बुरा, त्याज्य, और अपने आनन्दके लिये तम्बाकू पीकर दूसरोंके स्वास्थ्य, आराम, और शान्तिमें विघ्न उत्पन्न करना मनुष्यत्वके विरुद्ध समझते हैं ।

जिस कमरेमें लोग बैठे हों वहां फर्शको गीला करना, शोरगुल मचाना, बदबू फैलाना या ऐसाही कोई और काम करना जिससे

दूसरोंको तकलीफ और नुकसान पहुँचे, कोई भी अच्छा नहीं समझता। परन्तु तम्बाकू पीनेवाले हजार मनुष्योंमें एक भी ऐसा न होगा जिसे उस कमरेमें, जिसमे तम्बाकू न पीनेवाली स्त्रियाँ और बच्चे भी बैठे रहते हैं, तम्बाकू पीकर बदबू फैलानेमें कुछ भी सकोच हो।

यदि तम्बाकू पीनेवाला उपस्थित सज्जनोंसे पूछता है 'यहाँ तम्बाकू पीनेमें कोई आपत्ति तो नही है?' तो इसपर प्रायः यही उत्तर मिलता है,—'नही, शौकसे पीजिये'. (यद्यपि तम्बाकू न पीनेवालेको तम्बाकूकी बदबू और बदबू फैलानेवाले सिग्रेटके टुकड़े यहाँ वहाँ पड़े हुए या किसी तश्तरी या गिलासमे रक्खे हुए अच्छे नही मालूम होते); परन्तु यद्यपि तम्बाकू न पीनेवाले युवक इस विषयमें कोई आपत्ति नहीं करते तो भी ऐसी हरकते उन बच्चोंको, जिनसे कोई कुछ भी नहीं पूछता, कभी अच्छी नहीं मालूम हो सकतीं और न उनके लिये वे सुखकर ही हो सकती हैं। ऐसी बात होनेपर भी सुप्रतिष्ठित और ऊँचे दर्जेके लोग छोटे छोटे कमरोंमे बच्चोंके साथ भोजन करते हुए तम्बाकू पीकर बेखटके हवामें बदबू फैलाते हैं।

लोग प्रायः कहा करते हैं (और मैं भी कहा करता था) कि तम्बाकू पीनेसे दिमागके काम करनेमें आसानी मालूम होती है। और निःसंशय यह बात है भी सत्य। पर ऐसा मालूम होनेका कारण क्या है? जब मनुष्य तम्बाकू पीता है तब वह अपने विचारोंको याद रख उनका निरीक्षण नहीं कर सकता, इसलिये उसे मालूम होता है कि तम्बाकू पीनेके साथ

ही उसके दिमागमें यकायक बहुतसे विचार उत्पन्न हुए थे। परन्तु यह निरा भ्रम है—असल बात यह है कि तम्बाकू पीनेके साथ ही उसका अपने विचारोंपरका स्वामित्व उसके हाथसे जाता रहता है।

मनुष्य जब काम करता है तब वह हमेशा अपने अन्दर दो शक्तियाँ मालूम करता है। एक काम करनेवाली, और दूसरी उसके कामका निरीक्षण करती हुई सत्यासत्य वा भलेबुरेकी परीक्षा करनेवाली। दूसरी शक्ति तेज होती है तो काम धीमा, पर अच्छा होता है; परन्तु यही शक्ति जब किसी नशेली वस्तुके दवावसे पड़कर धीमी हो जाती है तो काम बहुत होता है, पर अच्छा नहीं होता।

लोग कहा करते हैं और मैं भी कहता था कि 'यदि मैं तम्बाकू न पीयूं तो मैं लिख नहीं सकता, मैं अग्रसर नहीं हो सकता और आरम्भ किये हुए कामको जारी नहीं रख सकता।' इसके क्या माने ?

इसके माने यही कि यातो तुम्हें कुछ लिखना ही नहीं है या जो कुछ तुम लिखना चाहते हो वह अभीतक अच्छी तरह तुम्हारी समझमें ही नहीं आया है, किन्तु उस विषयमें कुछ धुँधले विचार तुम्हारे सामने हैं। और यदि तम्बाकू न पीयो तो भलाबुरा पहिचाननेवाली जो शक्ति तुम्हारे अन्दर है वह यही बात बतलाएगी।

यदि तुम तम्बाकू न पीयो तो आरम्भ किये हुए इस किस्मके कामको यातो तुम छोड़ ही दोगे, या तबतक उस कामको आरम्भ ही न करोगे जबतक उस विषयके विचार तुम्हारे

दिमागमें पूरी तौरसे न भर जायँ; तुम उन धुंधले विचारोंमें डूबकर सोचनेकी कोशिश करोगे और अपना सब ध्यान उन्हें स्पष्ट करनेमें—समझ लेनेमें—लगा दोगे। परन्तु जब तुम तम्बाकू पीकर अपनी विवेकबुद्धिको—भले बुरेकी परीक्षा करनेवाली शक्तिको—दबाते हो तब तुम्हारे काममें आनेवाली रुकावटें टल जाती हैं। तम्बाकू पीनेके पहिले जो विचार तुम्हें मामूली मालूम होते हैं वेही विचार तम्बाकू पीनेके बाद तुम्हें महत्वके जान पड़ते हैं; जो तुम्हे पहिले धुन्धला मालूम होता है वही फिर वैसा नहीं मालूम होता; जो रुकावटें तुम्हारे लिखनेमें आती हैं वे तम्बाकू पीनेपर नष्ट हो जाती है, फिर तुम लिखने लगते हो और जल्द और बहुतसा लिख डालते हो।

(४)

क्या शराब या तम्बाकूके हलके नशेके भी भयकंर परिणाम हो सकते हैं? लोग कहते हैं कि यदि मनुष्य अफीम, भांग या शराबका इतना नशा करेगा कि वह बेहोश होकर जमीनमें लोटने लगे, तो निःसन्देह इसका भयंकर परिणाम हो सकता है; परन्तु तम्बाकूका हलका नशा करनेसे कोई भयङ्कर परिणाम नहीं हो सकता। लोग सोचते हैं कि हलका नशा करनेमे—विवेकबुद्धिको जरासा कुन्द करदेनेसे कोई विशेष हानि नहीं हो सकती। परन्तु ऐसा सोचना ठीक यह सोचनेके बराबर है कि घड़ीको पत्थरपर पटकनेसे ही उसे नुकसान पहुँच सकता है—उसमें थोड़ासा कतवार या कूड़ा डाल देनेसे नहीं।

याद रखिये, मनुष्यजीवनका मुख्य काम हाथ, पैर या

पीठसे नहीं, किन्तु उसकी बुद्धिसे ही किया जाता है । हाथ या पैरोंसे काम करनेके लिये पहिले बुद्धिमें कुछ हेरफेर या चलविचल होनेकी जरूरत होती है । और यही चलविचल मनुष्यके हाथोंसे होनेवाले कामोंको स्थिर करती है; परन्तु यह अत्यन्त सूक्ष्म और प्रायः अगम्य है ।

'ब्रूलाफ' (Brullof) एक सुप्रसिद्ध रशियन चित्रकार था । एक दिन उसका शिष्य एक चित्र बनाकर सुधरवानेके लिये उसके पास ले गया । ब्रूलाफ़ने उसमें जरासा हेरफेर कर उसे सुधार दिया । यह देख शिष्यने आश्चर्यसे कहा:— " वाह ! इसमें बहुत जरासा हेरफेर किया गया, पर इसकी रङ्गत ही कुछ और हो गयी । 'ब्रूलाफ़' ने उत्तर दिया:—" जहांसे ये छोटे छोटे और सूक्ष्म भेद आरम्भ होते हैं वहींसे कला आरम्भ होती है ।" ब्रूलाफ़का उपरोक्त कथन बहुत ठीक है । केवल कलाके ही विषयमें नहीं किन्तु मनुष्यके जीवनके विषयमें भी यही बात है । वास्तवमें जहा सूक्ष्म भेद या परिवर्तन होते हैं वहींसे मनुष्यका सच्चा जीवन आरम्भ होता है ।

मनुष्यका वह सच्चा जीवन नहीं है जब उसमें बड़े बड़े बाहरी भेद या परिवर्तन होते हैं—जब लोग यहां वहां घूमते हैं, लड़ते हैं या किसीकी कतल करते हैं—किन्तु सच्चा जीवन वह है जब दिमागमें छोटे छोटे और अतिसूक्ष्म परिवर्तन हुआ करते हैं ।

‡ 'रास्कोलनिकाफ़' (Roskolnikof)—का सच्चा

‡ रास्कोलनिकाफ़ Dostoyefsky के 'Crime and Punishement' नामक उपन्यासका नायक है ।

जीवन था; पर उस समय नहीं जिस समय उसने उस बुढ्ढी को था उसकी बहिनका खून किया। उस बूढ्ढी स्त्रीका खून करते समय और खासकर उसकी बहिनको मार डालते समय उसने अपना सच्चा जीवन नहीं बिताया, किन्तु वहुत दिनोंसे अपने पास रक्खे हुए कारतूस उसपर छोड़कर उसने एक मशीनका काम किया, जिसे वह किसी तरह टाल न सका। एक बुढ्ढी औरत मरी तो दूसरी उसके सामने आ कर खड़ी हुई; रास्कोलनिकाफ़ने फौरन् अपनी कुल्हाड़ी निकाली।

रासकोलनिकाफ सुमार्गपर था—उसने सच्चा जीवन व्यतीत किया। पर कब? उस समय नहीं जिस समय वह उस बुढ्ढी स्त्रीकी बहिनसे जा मिला, किन्तु उस समय उसका सच्चा जीवन था जब उसने किसी स्त्रीका खून नहीं किया था, या एक अनजान मनुष्यके घर खून करनेके इरादेसे नहीं घुसा था,—हाथमे कुल्हाड़ीले खून करनेके उद्देश्यसे नहीं खड़ा था, और न जब उसके चोगे या ओव्हर कोटमें कुल्हाड़ी लटकानेका कोई स्थान ही था—जब वह अपने कमरेमें पलंगपर पड़ा था, जब उसके मनमें उस बुढ्ढी स्त्रीकी हत्या करनेका विचार भी उत्पन्न नहीं हुआ था, जब उसने यह विचारतक नहीं किया था कि किसी एक मनुष्यकी इच्छामात्रसे किसी दूसरे अनुपयोगी और उपद्रवी मनुष्यका इस जीवलोकसे नामोनिशान मिटा देना योग्य है या नहीं, किन्तु जब वह यह सोचता था कि पिटर्सबर्गमें रहना चाहिये या और कहीं, माताका भेजा हुआ रुपया रख लेना चाहिये या नहीं, या जब ऐसे ही और बातोंके विचारमें डूबा हुआ था जिनका

उस बुड्ढी औरतसे कोई सम्बन्ध न था—ऐसे समय वह सुमार्गपर था और सच्चा जीवन व्यतीत करता था। ऐसे ही समय,—जब वह पाशविक कार्योंसे अलग था—उस बुड्ढी औरतका खून करना चाहिये वा नहीं, इस प्रश्नका निर्णय हो चुका था। इस प्रश्नका निर्णय तब नहीं हुआ जब एक स्त्रीका खून करके दूसरीको मारनेके उद्देश्यसे हाथमें कुल्हाड़ी ले उसके सामने वह खड़ा था। परन्तु जब वह कोई कार्य नहीं करता था—केवल विचार करता था—या यों कहिये कि जब उसका केवल दिमाग ही काम करता था और उसमें जब छोटे छोटे तथा सूक्ष्म परिवर्तन हो रहे थे—तभी उपरोक्त प्रश्नका—उस बुढियाके मारने वा न मारनेके प्रश्नका—निर्णय हो चुका था।

ऐसे समयमें—इन्हीं अवसरोंपर—उठे हुए प्रश्नोंका ठीक ठीक निर्णय करनेके लिये दिमाग बहुत साफ होना चाहिये; परन्तु ठीक इन्हीं अवसरोंपर लोग शराब या तम्बाकू पीकर प्रश्नके उचित निर्णयमें बाधा डालते हैं और विवेक-बुद्धिको दबाकर अपने पाशविक स्वभावके अनुकूल उस प्रश्नका निर्णय कर डालते हैं। बस, ठीक यही हालत रासकोलनिकाफ़की भी थी।

यों तो ये सूक्ष्म, अति सूक्ष्म परिवर्तन कहलाते हैं; पर इनपर बड़ी बड़ी महत्वकी और भयंकर बातें निर्भर करती हैं। जब मनुष्य किसी बातका निर्णय कर काम करना आरम्भ कर देता है तब उसके किये हुए निर्णयपर बड़े बड़े परिवर्तन निर्भर करते हैं—बड़े बड़े घर बरबाद हो सकते हैं, धन दौलत नष्ट हो सकती है और मनुष्यके शरीर भी मिट्टीमें मिल सकते

हैं । परन्तु विवेकबुद्धिपर जो उनका बुरा असर पड़ता है इससे बढ़कर और कोई नुकसान नहीं; क्योंकि होनेवाली बातोंकी मर्यादा बुद्धिसे ही निश्चित की जाती है ।

विवेकबुद्धिमे जो अत्यन्त सूक्ष्म परिवर्तन हुआ करते हैं उनके बड़े महत्वके परिणाम हो सकते हैं ।

कोई यह न सोचे कि मेरे कहनेका मतलब 'स्वतन्त्र इच्छा' या दृढनिश्चयसे है । इस प्रश्नपर, क्या मेरे लिये और क्या किसी औरके लिये, वादाविवाद करना व्यर्थ है । यहा मैं इस बातका निर्णय नहीं करना चाहता कि मनुष्य अपना इच्छित कार्य करे वा न करे—मेरे कहनेका केवल यही मतलब है कि यदि मनुष्यके भले बुरे काम उसकी बुद्धिमे होनेवाले अति सूक्ष्म परिवर्तनोंपर निर्भर करते हैं तो उसे अपनी उस हालत-पर, जब उसकी विवेकबुद्धिमे ऐसे सूक्ष्म परिवर्तन हुआ करें, ठीक वैसाही ध्यान रखना चाहिये जैसा कोई मनुष्य किसी चीजको तौलते हुए तराजूके काटेपर ध्यान रखता है । जहांतक सम्भव हो, हमें ऐसी अवस्थामें रहनेकी चेष्टा करनी चाहिये—और दूसरोंको भी इसी अवस्थामें रखनेकी चेष्टा करनी चाहिये—जिसमे बुद्धिका ठीक ठीक काम होनेके लिये आवश्यक विचारोंकी स्वच्छता और कोमलतामे बाधा न हो । तात्पर्य, नशा करके विवेकबुद्धिके काममे खलल न डालना चाहिये ।

पीछे कहा जा चुका है कि मनुष्यके जीवनमे प्रायः दो शक्तियाँ देखी जाती हैं । एक पाशविक वा दृष्टिहीन; दूसरी आत्मिक वा सदसत्को पहिचाननेवाली । अथवा यो कहिये कि मनुष्यके कामोमे मुख्यतः इच्छाका प्राबल्य या विचारका

प्राबल्य या दोनों समान अंशोंमें भी पाये जाते हैं। खैर, देखिये, घड़ी दो प्रकारसे मिलायी जा सकती है: बाहरी काटे घुमाकर या भीतरी यन्त्रोंके द्वारा। यही बात मनुष्यके कामोंकी भी है। मनुष्य या तो केवल इच्छासे ही कोई काम कर सकता है या विचारसे भी। जैसे घड़ीकी चाल उसके भीतरी यन्त्रोंके द्वारा ठीक करना सबसे अच्छा मार्ग है वैसे ही मनुष्यके काम भी विचारोंसे स्थिर करना सबसे उत्तम मार्ग है। और जैसे ठीक ठीक समय जाननेके लिये घड़ीके भीतरी पुर्जोंको साफ रखनेपर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है वैसे मनुष्यके काम भी ठीक ठीक होनेके लिये दिमागको साफ रखनेकी बहुत ज्यादा जरूरत है; क्योंकि दिमाग ही एक ऐसी चीज़ है जो मनुष्यसे अच्छे और ऊँचे दर्जेके काम करा सकती है। इन बातोंको प्रत्येक मनुष्य जानता है, तो भी उसे कभी कभी अपनेको भी धोखा देनेकी जरूरत पड़ती है। लोग दिमागसे ठीक ठीक काम लेनेमें जितने उत्सुक नहीं देखे जाते उतने अपने कामको ठीक और योग्य समझनेके उत्सुक होते हैं। और इसीलिये वे उन वस्तुओंको काममें लाते हैं जो उनकी विवेकबुद्धिके कामोंमें खलल डालकर उनकी उत्सुकता—इच्छा—पूरी करती हैं।

(५)

लोग शराब या तम्बाकू क्यों पीते हैं ? आनन्द प्राप्त करने या किसी और कामके लिये नहीं—किन्तु विवेकबुद्धिको दबानेके लिये ही शराब या तम्बाकूका नशा किया जाता है। अगर ऐसी बात है, तो आप ही सोचिये कि उसके कैसे भयान-

नक परिणाम हो सकते हैं ! सचमुच, यह विचार करनेकी बात है कि यदि कोई मनुष्य बिना किसी सीधे रूलर या कोना नापनेकी कोनियेकी सहायता लिये, कुछ मामूली टूटे फूटे अवज़ारोंसे ही एकाध इमारत खड़ी करे तो वह कैसी इमारत तैयार होगी !

ठीक यही बात आजकल मनुष्यके जीवनमें भी पायी जाती है। बलिहारी है नशेबाज़ीकी ! मनुष्यकी विवेकबुद्धि उसकी इच्छाके अनुकूल नहीं होती, इसीलिये वह नशेके ज़ोर-पर उसके अनुकूल बनायी जाती है। एक एक व्यक्तिके जीवन-का आजकल यही हाल है और समाज और राष्ट्रोंका भी यही हाल है !

जीवनके विशेष विशेष प्रसंगोंपर होनेवाली अपनी मानसिक दशापर ध्यान देनेसे नशा करके बेहोश बननेका रहस्य अच्छी तरह मालूम हो सकता है। मनुष्यके सामने कुछ नीतिमत्ताके प्रश्न हल किये जानेके लिये हमेशा रहा करते हैं और जिनके हल करनेपर ही उसका समस्त जीवन-सुख निर्भर करता है। इन प्रश्नोंके हल करनेमें चित्तके एकाग्र करनेकी बड़ी आवश्य-कता है। और एकाग्रचित्त होकर विचार करना साधारण बात नहीं—परिश्रमका काम है। हर एक किसमके परिश्रममे—खासकरके आरम्भमें—एक समय ऐसा होता है जब काम कठिन और कष्टदायक मालूम होता है; और इसी समय हृदय-की कमज़ोरीके कारण मनुष्यकी वह काम छोड़ देनेकी इच्छा होती है। शारीरिक काम तो पहिले पहिले कष्टदायक मालूम होते ही हैं, पर मानसिक काम और भी कष्टदायक प्रतीत होते

हैं। लेसिंग साहब कहते हैं: " किसी विषयपर विचार करते हुए जब विचार कठिन मालूम होने लगते हैं तब उन विचारोंको छोड़ देनेमें लोग प्रवृत्त होते हैं।" परन्तु इसके साथ साथ मैं यह भी कहूँगा कि जब विचार कठिन होने लगते हैं, तभी वे लाभदायक भी होते जाते हैं। उपस्थित प्रश्नोंको हल करना मनुष्यको कष्टदायक मालूम होता है; और यही कारण है कि वह उससे अपनी जान बचाना चाहता है। यदि उसके पास इन्द्रियोंको कमजोर करनेके—विवेक बुद्धिको दबानेके—साधन न हों तो वह उपस्थित प्रश्नोंको अपने दिमागसे नहीं हटा सकेगा, किन्तु उनको हल करनेमें वह मजबूर किया जायगा। परन्तु जब वह देखता है कि इन कष्टदायक प्रश्नोंको एकदम कुछ समयके लिये भुला देनेका उसके पास साधन है तो वह उसीसे सहायता लेता है, और कष्टदायक प्रश्नोंसे होनेवाली मनकी अशान्तिसे अपनी जान छुड़ाता है। इस तरहसे उसका दिमाग उन प्रश्नोंके विषयमें अन्धकारमय हो जाता है और वे अनिर्णीत प्रश्न तबतक अनिर्णीत ही बने रहते हैं जबतक कि उसके दिमागमें उनका प्रकाश फिरसे नहीं पड़ता। परन्तु दिमागका अन्धकार हटकर जब वे प्रश्न हल किये जानेके लिये फिर प्रकाशमें दिखायी पड़ते हैं तो वही पिछला उपाय फिर किया जाता है, और इस तरहसे महीनों, बरसों नहीं—जीवनके अन्ततक वे नीतिमत्ताके प्रश्न बिना हल हुए ही रह जाते हैं। और इन्हीं नीतिमत्ताके प्रश्नोंके निर्णयपर मनुष्य-जीवनके समस्त कार्य निर्भर करते हैं।

मनुष्य यदि अपनी उस हालतको, जबकि वह नशा करके

बेहोश पड़ा रहता था, सोचे और नशा न करनेवालोंकी हालतपर भी विचार करे तो उसे मालूम हो जायगा कि नशा करनेवालों और न करनेवालोंके जीवनमें कितना अन्तर होता है। आप जितना नशा करते जायँगे उतने ही नीतिभ्रष्ट भी होते जायगे।

(६)

अफीम, भांग, गांजा आदि पीनेवालोंको बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं, शराबका गहरा नशा करनेवालोंको भी बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं; परन्तु लोगोंके उस नियमसे मद्य-पान और धूम्रपानके और भी भयंकर परिणाम होते हैं जिसे लोग निर्दोष समझते हैं और जिससे अधिकांश लोग, विशेषतः हमारे सुशिक्षित सुसंस्कृत लोग अभ्यस्त हैं।

इन भयङ्कर परिणामोंको देखते हुए हम लोग यह भी देख रहे हैं और सबको स्वीकार करना पड़ेगा कि समाजके सब प्रकार के मुख्य मुख्य कार्य—राजनैतिक, सरकारी, वैज्ञानिक, साहित्य तथा कलाकौशल सम्बन्धी—प्रायः उन लोगोंके द्वारा होते हैं जो नशेमें चूर रहते हैं, शराबके नशेमें जिनके होश ठिकाने नहीं रहते।

लोग समझते हैं कि साधारण सुखी मनुष्य जितनी शराब पीता है उतनी एक दिन प्रत्येक भोजनके समय पी लेनेवाले मनुष्यकी दशा दूसरे दिन काम करते समय फिर सुधर जाती है, उसके होश ठिकाने हो जाते हैं और उसमें कोई विकार नहीं रहता। पर यह बिलकुल भूल है। एक बोतल शराब या एक ग्लास ब्रांडी जिसने कल चढ़ा ली हो, आज उसपर सुस्ती

जरूर सवार होगी; इसलिये उसका मन आज बेकाम है और तम्बाकू या सिग्रेट पीनेसे वह और भी बेकाम होता जाता है। जो मनुष्य बराबर नित्य नियमपूर्वक शराब और तम्बाकू पीता है वह यदि होशमें आना चाहे तो कमसे कम एक सप्ताह उसे केवल होश दुरुस्त करनेके लिये चाहिये। स्मरण रहे, इस बीच वह तम्बाकू जैसे आम नशेसे भी अलग रहे। परन्तु कौन होश दुरुस्त करना चाहता है ? *

---

* पर यह कैसी बात है कि जो लोग नशा नहीं करते वे नशा करनेवालोंके समान उच्चश्रेणीके नीतिमान नहीं होते ? और क्या कारण है कि जो लोग नशा करनेवाले हैं उनमें ही सबसे श्रेष्ठ मानसिक और नैतिक गुण पाये जाते हैं ?

इसका उत्तर यह है कि पहिले तो हम यह नहीं जानते कि वे नशा करनेवाले लोग यदि नशा न करते होते तो कितना ऊँचा दर्जा पाते। दूसरी बात यह है कि जिन मनुष्योंमें स्वभावसे ही उत्तम नीतिमत्ता है वे नशा करनेपर भी बड़े बड़े काम कर डालते हैं; इसपर इतना ही कहा जा सकता है कि यदि वे नशा न करते तो इससे भी बड़े बड़े काम कर सकते। मेरे एक मित्रने मुझसे कहा कि यदि कैंट साहब इतनी तम्बाकू न पीते तो सम्भव है कि उनके ग्रन्थोंकी लेखनशैली इतनी भद्दी और खराब न होती। और फिर जितना ही मनुष्य कम नीतिमान होगा उतना ही कम उसे विवेकबुद्धि और जीवनका भेदभाव मालूम होगा; और इसलिये विवेकबुद्धिको मारना उसके लिये उतना ही कम आवश्यक होगा। और ऐसा ही कारण है जिससे बुद्धिमान मनुष्य, जो वह भेदभाव बहुत जल्द मालूम कर लेते हैं, उससे बचनेके लिये नशा

इस प्रकार संसारमें राजाओं या शिक्षकों द्वारा अथवा प्रजाओं या शिष्यों द्वारा जो कुछ हो रहा है वह ऐसे समय किया जा रहा है जब करनेवाले अपने होशमें नहीं हैं।

और यह जो मैं कहता हूँ इसे आप हँसी या अतिशयोक्ति न समझें, इस जीवनमें जिस घबराहट और कमजोरीका सामना करना पड़ता है उसका कारण यही नशेबाजी है जिसकी आराधनामें बहुतेरे मनुष्य लगे रहते हैं। क्या वे लोग, जो नशेमें चूर नहीं है, Eiffel Tower (एफिल मीनार) उठानेसे लेकर फौजी नौकरी करनेतकरू ये सब काम कर सकते हैं ?

क्या आवश्यकता है कि एक कम्पनी स्थापितकर, पूंजी इकट्ठीकर, परिश्रमकर, हिसाब लगाकर हजारों टन लोहेसे एक मीनार खड़ी की जाय ? परन्तु ऐसी मीनार बनती है। लाखों मनुष्य उसपर चढ़ना, कुछ देर वहा ठहरना और नीचे उतर आना अपना कर्तव्य समझते हैं, और भला इस मीनारके बनानेसे और देख आनेसे लाभ क्या हुआ ? ऐसी ही एक बल्कि इससे भी बड़ी मीनार एक दूसरे स्थानमें खड़ी करनेकी इच्छा उत्पन्न होती है। क्या सावधान--नशा न करनेवाले मनुष्य कभी ऐसे निरर्थक काम कर सकते हैं ? अच्छा, और एक उदाहरण सुनिये। कई वर्षोंसे यूरोपवाले, मनुष्योंको मारनेके अच्छेसे अच्छे उपाय ढूँढ निकालनेमें लग हुए है और प्रत्येक नवयुवकको खून करनेकी रीतिकी शिक्षा दे रहे हैं। कौन नहीं जानता कि अब कोई जङ्गली मनुष्य हमारे ऊपर आक्रमण करने नहीं चढे

करते हैं और उन्हीं नशोंमे चूर होकर अपनी मिट्टी खराब करते हैं।

आ रहे हैं ? परन्तु सभ्य और ईसाई राष्ट्रोंकी ये तैयारियाँ परस्पर लड़ मरनेके लिये हो रही हैं; सभी समझते हैं कि ये काम, असह्य, कष्टप्रद, हानिकर, अधार्मिक, अपवित्र और अयुक्तिक हैं, पर सभी परस्पर मरने कटनेके सामान तैयार कर रहे हैं। कुछ तो यह निर्णय करनेके लिये राजकीय समितियां स्थापित करते हैं कि कौन किनकी सहायतासे किसको मार डाले, और कुछ हत्या करनेकी कला सिखा रहे हैं, और कुछ अपनी इच्छा, विवेकबुद्धि और तर्कको तिलांजली दे कतलकी इन तैयारियोंके सामने सिर झुकाते हैं। क्या ये काम सावधान मनुष्योंके हैं ? ये काम वे शराबी ही कर सकते हैं जिनके होश कभी ठिकाने नहीं होते; जीवन और विवेकबुद्धिकी इस भयङ्कर विरोधी अवस्थामें (जिस अवस्थामें आज हमारा सारा समाज सड़ रहा है उसमें) वे ही रह सकते हैं !

इससे पहले, मैं नहीं समझता कि, कभी ऐसा समय हो जब लोग विवेकबुद्धिको आजकलकी तरह पददलित करते हों या जब उनके कार्य विवेकबुद्धिकी सम्मतिके इतने विरुद्ध हों।

मनुष्यजातिने मानो अपना मनुष्यत्व खो दिया है। मानों किसी जड़ शक्तिने उसे वह अवस्था न प्राप्त करने दी, जो स्वभावतः उसकी बुद्धिके अनुकूल है। और इसका कारण—यदि और भी कारण हों तो सबसे बड़ा कारण—यह है कि लोग शराब और तम्बाकू पीकर सुधबुध खो देते हैं

जिस दिन यह सत्यानाशी बला मनुष्यजातिके जीवनसे दूर होगी वह दिन भी एक महापर्व समझा जायगा, और वह महापर्व भी समीप है। लोग इस बुराईको समझ रहे हैं। लोग

धीरे धीरे इन गाफ़िल करनेवाली चीज़ोंका असली रूप दे रहे हैं। इन चीज़ोंसे जैसी भयंकर हानि होती है उसे ले देख रहे हैं और परस्पर एक दूसरेको बता रहे हैं। विचा का यह अप्रत्यक्ष परिवर्तन, नशीली वस्तुओंके सेवनसे मनु जातिको मुक्त करेगा—यह परिवर्तन उनकी आँख खोल देग जिसमें लोग विवेकबुद्धिकी आज्ञाका आदर करके उस अनुकूल काम करेंगे।

इस परिवर्तनका आरम्भ हो चुका है। अभी इसकी च श्रेणियोंमें ही हो रही है; परन्तु कब? जब निम्नश्रेणीके लोग को गफ़लतके इन सामानोंका संसर्ग हो चुका है।

उद्योग और आलस्य ।

In the sweat of thy face shalt thou eat bread, till thou return unto the ground, for out of it wast thou taken —Gen iii 19.

भाव, 'भौंके पसीनेसे तू अपनी रोटी कमा खा।'

यह एक ग्रन्थका सारविचार है। उसका यही नाम भी है। उस ग्रन्थकी हस्तलिखित प्रति मैंने देखी थी । उसके लेखक मिस्टर टी० एम० बानडरफ है। ❀

❀ टी० एम० बानडरफ १८२० ई० मे पैदा हुए। १८५८ मे वे फौजमे भरती किये गये, जहा उन्होंने २५ वर्ष नौकरी की। परन्तु 'पुराने धर्म-ग्रन्थको' माननेवाले और बहुतसी बातोंमें यहूदियोंकी नकल करनेवाले सैबेरियन लोगोका साथ देनेके कारण वे १८६७ में सैबेरियाके उड़ीना नामक स्थानमे भिजवा दिये गये-अर्थात् उन्हे काले पानीकी सजा हुई। वहा उन्होंने ऐसे परिश्रमके साथ खेतपर काम किया कि वे एक सुखी किसान बन गये । परन्तु उन्हे लोगोंको 'परिश्रम करो और खाओ' यह उपदेश देना था जिससे फिर उन्हे गरीबीकी दशा प्राप्त हुई । उन्होने इस विषयपर जो पुस्तक लिखी वह राज्यके अधिकारियोंको पसद न आयी और इसलिये वह रूसी भाषामें छप भी नही सकी। पर उसका अनुवाद फ्रेंच और दूसरी भाषाओंमे हो चुका है । इस पुस्तकका एक नाम "The agriculturist's Triumph अर्थात् 'कृषकका विजय' है।

मैं उस पुस्तकको बड़े महत्त्वकी समझता हूं। उसकी भाषा कैसी सरल, स्पष्ट और ओजस्विनी है! लेखक जिस बातको लिख रहा है उसपर उसका अटल विश्वास है। यह विश्वास उसकी एक एक पंक्तिसे प्रकट हो रहा है। परतु सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात उसमे यह है कि उसका सारविचार महत्व, सत्य और गभीरतासे पूर्ण है।

ग्रन्थका सारतत्व इस प्रकार है: दुनियाँमें जितनी बातें हैं उनमे सबसे महत्वकी बात, उन बातोकी छानबीन कर महत्व-के क्रमसे उनको पहिला, दूसरा या तीसरा स्थान देना है।

दुनियाके कारोबारमें इस छानबीनकी बहुत अधिक आवश्यकता है। क्योंकि दुनियाका कारोबार करनेसे पहिले मनुष्यको अपने कर्तव्योंका ज्ञान हो जाना चाहिये।

पुराने ढंगके पादरी टेशियनका कहना है कि मनुष्य-पर जो इतनी मुसीबतें गुजरती हैं उसका कारण यह नहीं है कि वे परमात्माको नहीं जानते। परमात्माको न जाननेसे इतनी हानि नही होती जितनी झूठे पदार्थको परमात्मा मान लेनेसे होती है। यही बात मनुष्योंके कर्तव्योंके विषयमे भी घट सकती है। कर्तव्योंका ज्ञान न रहनेसे सकट नहीं आते। जो वास्तवमे अधर्म है उसीको धर्म और कर्तव्य मान लेनेसे और जो इस ससारमें मनुष्यका पहिला धर्म है उसकी उपेक्षा करनेसे मनुष्यकी दीनावस्था होती है। बानडरफ साहब कहते हैं कि मनुष्योंने ऐसे नियमोंको धर्म मान लिया जिनसे सिवाय हानिके और कोई लाभ नहीं, और ऐसे नियमको छिपा दिया जो, मुख्य, आदि, और सच्चा कर्तव्य है और जिसकी घोपणा

धर्मशास्त्रमें सबसे पहिले इस प्रकार की गयी है । `

'अपने भौंके पसीनेसे अपनी रोटी कमा खा ।'

जो लोग बाइबलके कथनको पवित्र और त्रुटिहीन मानते है उनके लिये, परमात्माकी यह आज्ञा ही, (जिसका किसीने विरोध नहीं किया) उसका यथेष्ट प्रमाण है । पर जो लोग बाइबलको नही मानते वे ज़रा अपनी बुद्धिसे काम लें तो यह कोई कठिन विषय नही है—कोई नई दुनियाँ नहीं है । मनुष्यके जीवनसंबंधी बातोंका योग्य विचार कीजिये, जैसा कि वाडरफ साहबने अपनी पुस्तकमें किया है ।

पर बाइबलकी इस समय ऐसी दुर्गति है कि हमलोगोंमें बहुतेरे, यह सुनकर कि अमुक सिद्धान्त बाइबलके तत्वसे मिलता जुलता है, उसपर विश्वास करना छोड़ देंगे । क्योंकि बाइबल समझानेवालोंने लोगोंको ऐसी बेतुकी और मूर्खताकी बातें बतलायी हैं कि बाइबलसे उनका विश्वास हट चला है ।

'बाइबलमें क्या धरा है ? वह तो मतलबसिन्धु है, जिसके जीमें जो आवे वह उसमेंसे उसे निकाल ले । चाहे जिस शब्दका चाहे जो अर्थ हो जाता है । ऐसी पुस्तकको दूरसे नमस्कार ।'

पर ऐसा कहना युक्तिसगत नहीं । अगर लोग धर्मशास्त्रकी आज्ञाओंको चाहे जिधर खींच ले जायँ तो इससे धर्मशास्त्र दोषी नही होता, इस तरह यदि कोई सत्य कथन करे और बाइबलसे यह बात मिल जाय तो इससे वह 'सत्य कहनेवाला मनुष्य झूठा नहीं होता ।

अगर यह मान लिया जाय कि जिस ग्रन्थको हम धर्म-ग्रन्थ मानते है वह ईश्वरका बनाया नहीं है तो आपको इसका विचार करना पडेगा कि यदि वह ग्रंथ ईश्वरकृत नहीं तो उसे लोग वैसा क्यों मानते है, और किसी ग्रन्थकी इतनी इज्जत क्यों नहीं होती ? इसका कोई कारण अवश्य होगा।

और वह कारण स्पष्ट है।

धर्ममूढ़ लोगोने बाइबलको ईश्वरकी रचना माना; क्योंकि उस ग्रन्थमें ऐसी बाते थीं जिसका ज्ञान लोगोंको न था। यही कारण है कि बारबार विताड़ित होने पर भी वह अबतक जीवित है और अब भी दैवी माना जाता है।

इसी धर्मग्रन्थमें वह उपेक्षित आज्ञा है जिसको बांडरफ साहब प्रकाशमे ले आये है।

भूल तो यह हुई है कि बाइबलमें जो शब्द है उनके भावार्थकी ओर किसीने ध्यान नहीं दिया। उसमें 'भौंका पसीना' लिखा तो लोगोंने उसे भौंका पसीना ही समझ लिया। भौंके पसीनेसे मतलब है अपने बलपर खड़े हो, परिश्रम करो। यह मतलब समझमे न आनेसे वह आज्ञा बेमतलबसी हो गयी। इसी प्रकार बाइबलमे जहा कुछ किसी रूपकका वर्णन आता है वहां उसे वैसाका वैसा ही लोग समझ लेते है। उदाहरणार्थ, ईश्वर और शैतानका युद्ध—इसे ज्ञान और मोहकी लड़ाई समझना ही ठीक है।

मनुष्य मृत्युसे डरता है, पर मृत्यु उसे नहीं छोड़ती। मूर्ख मनुष्य मस्त रहता है, पर वह ज्ञान प्राप्त करनेकी चेष्टा-में लगा रहता है। मनुष्य चुपचाप पड़ा रहना चाहता है पर

साथ ही बिना कष्ट उठाये अपनी इच्छाओंको पूरी किया चाहता है । पर बिना परिश्रम और कष्टके कौन जीवित रह सकता है ?

वाडरफ साहबने जो वाक्य उद्धृत किया है वह बड़े मतलबका है । क्योंकि यह वाक्य ईश्वरने आदमसे कहा था । लोग इस बातको मानते है । पर यह सच है और इसी- लिये यह मानवजीवनका एक प्रधान नियम है । न्यूटनने कहा इसलिये, गुरुत्वाकर्षणका नियम सत्य नहीं । वह सत्य होनेके कारण ही सत्य है । न्यूटनने इस नियमको सत्य कर दिखाया इसलिये, वह धन्यवादका पात्र है ।

हमारे नियमकी भी वही बात है । ' भौंके पसीनेसे अपनी रोटी कमा खा । ' यह एक नियम है जिससे बहुतसी बातोंका पता लग जाता है । इसको मैंने जान लिया, अब नहीं भूल सकता, जिसने मुझे इसका दर्शन कराया उसका मैं कृतज्ञ रहूंगा ।

यह नियम देखनेमें मामूली है; पर है गूढ़ । एक बार अपने इर्दगिर्द देख जाइये । लोग इस नियमकी केवल उपेक्षा नहीं करते, बल्कि ठीक इसके उल्टी चाल चलते है । लोग इस नियमका पालन करनेकी चेष्टा नहीं करते---उड़ा देनेकी चेष्टा करते हैं । राजा-रंक सबका यही हाल है । वाडरफ साहबने अपनी पुस्तकमें इसी नियमसे सिद्ध किया है और दिखला दिया है कि इसकी उपेक्षासे मनुष्यको कैसे कैसे दुःख उठाने पड़ते है ।

वांडरफ साहब इस नियमको आदि और प्रधान नियम मानते हैं ।

उन्होंने सिद्ध किया है कि, जितनी भूलचूकें, पाप, अपराध और बुरे काम होते हैं उन सबका कारण इसी नियमका भंग है। मनुष्यके कर्तव्योंमें सबसे पहिला और मुख्य कर्तव्य अपनी रोटी आप कमा खाना है। अपनी रोटी आप कमा खाना यानी परिश्रम करके केवल दाल और रोटी खा लेना नहीं, बल्कि मनुष्यका काम जिन जिन वस्तुओंके बिना नहीं चल सकता उन वस्तुओंको अपने ही परिश्रमके बलसे पैदा करना इस रोटी कमा खानेका मतलब है। ऐसी वस्तुएं बहुत नहीं हैं—रसोईके लिये ईंधन, सरदीसे बचनेके लिये कपड़े, थकावटसे बचनेके लिये विश्राम—इतनी ही सामग्री मनुष्यके लिये अति आवश्यक है।

बांडरफ साहब कहते हैं कि अबतक जीते रहनेके लिये काम करना पड़ता है यह नियम सबको स्वीकृत होने पर भी सब किसीको बाध्य होकर इसका पालन करनेकी बुद्धि नहीं हुई। ऐसा न होना चाहिये। प्रत्येक मनुष्यके लिये यह उपयोगी नियम प्रधान धर्म होना चाहिये।

यह नियम धार्मिक नियम समझा जाना चाहिये; जैसे ब्राह्मणोंके लिये संध्योपासन है; पादरियोंके लिये रविवारके दिन गिरिजाघर है, या मुसलमानके लिये रोजका नमाज है। यदि लोग इस नियमको धार्मिक नियम मानकर उसका पालन करना चाहें तो वे आनन्दसे कर सकते हैं—कोई बाधा नहीं पड़ सकती। जैसे सालके कई तेहवारोंको माननेके लिये फुरसत मिल जाती है वैसे इसके लिये भी मिल सकती है। रूसमें ८० पवित्र तेहवार मनाये जाते हैं। इस नियमके पालनमें सिर्फ

४० दिन ही काफी है।

इतनी सादी बात—ऐसा सरल नियम और उसमें मनुष्यके सारे दुःखोंको मेटनेकी शक्ति हो, यह बड़े ही आश्चर्यकी बात मालूम होगी। पर यह बात इतने आश्चर्यकी नहीं है जितना आश्चर्य, ऐसा सादा और उपयोगी नियम होते हुए भी लोगोंको अपने दुःख दूर करनेकी दवा गली गली और बाजार हाटमें ढूढ़ते हुए भटकते देखकर होता है। जरा सोचिये।

लोटेमे तला लगाना छोड़ जो आदमी उसमें पानी ठहरानेकी और और युक्तियां करता है वह उन लोगोंका, जो आजकल दुःख दूर करनेकी नई नई दवाएं ईजाद कर रहे हैं, एक अच्छा नमूना है।

खूनखराबी, मारपीट, जेल, फांसी आदि प्रत्यक्ष बातोंको छोड़ और सब बुराइयां कहांसे पैदा होती हैं? भूख, सब प्रकारके अभाव, अधिक परिश्रम, सुस्ती और इनसे पैदा होनेवाली बुराइयोंसे ही सब खराबियोंका जन्म है। एक ओर आवश्यकताकी पूर्त्ति भी न हो और दूसरी ओर गुलछर्रे उड़े—यह कैसा अन्याय है—कैसी असमता है! क्या इस असमताको दूर करनेसे भी बढ़कर और कोई पवित्र कर्तव्य है? इन खराबियोंको मटियामेट करनेका उपाय सब किसीके हाथ है। मनुष्यकी जो आवश्यकताएं हैं उनकी पूर्त्ति जिस कामसे हो वह काम कीजिये—सुस्ती और फजूल बातोंको छोड़िये—उन ऐशोआरामके सामानोंको दूर कीजिये जो लालच और बुराईके घर हैं; और अपना काम आप कीजिये—अपनी रोटी आप कमाइये जैसा कि बाउरफ साहबका कहना है।

हम लोगोने ऐसा पचड़ा मचा रक्खा है–इतने कानून बना डाले हैं–धर्मके, परिवारके, समाजके आदि अलग अलग कानून हैं–इतने उपदेशोको शिरोधार्य माना है कि दिमागमें यह विचार करनेकी शक्ति न रही कि कौन अच्छा है और कौन बुरा।

एक ईश्वरकी प्रार्थना करता है, दूसरा फौज इकट्ठी करता है या उसके लिये चन्दा उगाहता है, तीसरा झगडोका फैसला करता है, चौथा किताबोका कीड़ा बनता है, पाचवा रोगियोंको चंगा करता है, छठा शिक्षा प्रचार करता है और ऐसे ऐसे बहाने दिखाकर लोग अपनी जीविका आप चलानेके कष्टसे जी चुराते हैं–उसे दूसरोपर छोड़ देते है और यह भूल जाते हैं कि मनुष्य भूख और परिश्रमसे मर रहे हैं जिनके मरनेपर डाक्टर या जज का क्या काम? कर्तव्य एक दो नहीं बहुत होते हैं पर उनमे भी पहिला और आखिरी ऐसा क्रम होता है। पहिला कर्तव्य पहिले करना चाहिये, फिर दूसरा। जैसे जमीन जोतनेसे पहिले हेंगा नहीं चलाना चाहिये वैसे ही पहिला काम बादको और बादका काम पहिले करना अनुचित है।

बाडरफ साहब उसी पहिले कर्तव्यका स्मरण दिला रहे हैं। बाडरफ साहब दिखला रहे हैं कि इस कर्तव्यके पालनसे किसी काममे बाधा नहीं पडती; किन्तु मनुष्यका दुःख दूर होता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस नियमके पालनसे मनुष्य-समाजका ऊंचनीच भाव, हम बड़े, तुम छोटे, यह ख्याल जाता रहता है और यह ख्याल छिपानेके हेतु मुंहपर

जैसी मीठी बातें हुआ करती है उनका भी अन्त हो जाता है। वाडरफ साहब कहते हैं कि अपनी रोटी आप कमा खानेसे सब मनुष्य बराबर हो जाते हैं और भोग-विलास पास फटकने भी नहीं पाता।

सरस खानपान करनेवाले, साफ और कोमल हाथों वाले, और सुन्दर कपडे पहिननेवाले लोग हल नहीं चला सकते, न कुआ खोद सकते है। सबके लिये समान कोई पवित्र काम हो तो वह मानव समाजको एकत्र कर सकेगा। वांडरफ साहब कहते हैं कि अपने स्वाभाविक जीवनसे हट रहनेके कारण जिनकी बुद्धि नष्ट हो गयी है वे अपना खाना आप पैदा करे तो उनकी बुद्धि फिर जागृत होगी; और जो इस प्रकार उपयोगी परिश्रममें लग जायगे उन्हे शान्ति और सुख प्राप्त होगा; क्योंकि यह काम परमात्माने ही लगा दिया है—प्रकृतिने ही सिद्ध कर दिया है।

मानवजातिकी रक्षाके लिये, वाडरफ साहब कहते हैं कि, यही औषधि है। यदि मनुष्य इस आदि नियमको परमात्माका अनिवार्य नियम मान ले—अगर प्रत्येक मनुष्य अपनी जीविका अपने परिश्रमसे चलाना अवश्य कर्तव्य समझे तो सारी मनुष्यजाति एक ईश्वरकी पूजा करेगी, मानवी व्यवहार परस्पर प्रेमका होगा, जो आफतें हमारे ऊपर अभी सवार हैं उनका नामोनिशान मिट जायगा।

हमलोगोंकी रहन सहन ठीक इसके विपरीत है। यदि किसीके पास धन हुआ तो वह धनी मनुष्य परमेश्वरका प्यारा समझा जाता है या लोग उसे अपनेसे ऊचा मानते हैं। हम वाडरफ साहबके सिद्धान्तको न समझ कर उसे संकुचित,

एकपक्षीय, खोखला और निकम्मा समझते है। पर बाङ्गफ साहब क्या कहते हैं उसे सावधानीके साथ देखिये और सोचिये कि उनका कहना ठीक है या गलत।

धार्मिक और राजनीतिक प्रश्नोपर हम लोग जैसे मन लगाकर विचार करते हैं वैसे ही इस प्रश्नको भी जरा गौरसे देखें। यदि 'अपना अन्न आप पैदा करना' इस नियमको धार्मिक रूप दिया जाय, और यह मान लिया जाय कि इस पवित्र नियम के सामने सब लोग शिर झुकाने लग गये तो इसका क्या परिणाम हो सकता है?

यह परिणाम होगा कि सब लोग परिश्रम करेंगे; और उनका फल लाभ करेंगे। अन्न और जीवनके अत्यावश्यक पदार्थोंकी फिर खरीद-बिक्री न होगी।

इसका क्या फल होगा?

मनुष्य भूखों न मरेंगे। यदि दुर्भाग्यवश कोई मनुष्य अपने या अपने परिवारके लिये काफी अनाज न पैदा कर सका तो दूसरा ही कोई मनुष्य जिसने सौभाग्यवश अधिक अन्न पैदा किया हो उसके अभावकी पूर्त्ति कर देगा; उसे ऐसा करना ही पड़ेगा; क्योंकि अन्न व्यापारकी वस्तु न होनेके कारण उसका और कोई उपयोग नहीं हो सकेगा। उस अवस्थामें अपने पेटके लिये मनुष्यको छल या मारपीट करनेकी जरूरत न होगी। इस समय अभावोंके कारण उन्हें जैसी कुनीतिका अवलंब करना पड़ता है फिर उसका कोई काम न रहेगा।

उस अवस्थामें भी यदि मनुष्य छल कपट या धींगाधींगी

करे तो यही कहना पड़ेगा कि उसे इन बातोंसे स्नेह है—यद्यपि इनकी कोई आवश्यकता नहीं है।

जो लोग किसी कारण अपनी खुराक आप पैदा करनेमें असमर्थ हैं उन्हें अन्नके लिये आपको, अपने परिश्रमको या कभी कभी अपनी आत्मातकको बेचनेकी ज़रूरत पड़ती है, वह फिर न रहेगी।

आजकल जो बलवानोंके लिये अन्न पैदा करनेकी मिहनत बेचारे शक्तिहीनोंसे ली जाती है वह बात भी फिर न रहेगी।

और फिर 'रोटीके लिये परिश्रम' करनेसे बचे रहने और उस कामको दूसरोंके माथे छोड़ देनेकी वर्तमान साधारण प्रथाका बिल्कुल लोप हो जायगा; जो आजकल अशक्त मनुष्योंसे अधिक मिहनत लेने और शक्तिवानोंको उससे बिल्कुल अलग रखनेकी प्रथा प्रचलित है।

फिर लोगोंकी यह प्रवृत्ति न रहेगी जो आजकल परिश्रमी मनुष्यसे अधिक परिश्रम लेने और आलसीके आलस्यको बढ़ानेकी ओर रहती है। जिस प्रकार लुढ़की हुई गाड़ीको उसी तरह घसीट लेजानेमें सफलता और सुगमता नहीं होती उसी प्रकार रोटी कमानेके पारिश्रमिक कार्योंको यथा विभाग न बांट देनेसे, और उसी कार्यको आदि कर्त्तव्य न समझनेसे जीवनके उद्देश्योंमें सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। लुढ़की हुई गाड़ीको घसीटनेमें परिश्रम भी अधिक करने पड़ते हैं और अन्तमें वह टूट जाती है। परिश्रमरहित सदोष जीवनको सुधारनेके लिये हमारी प्रचलित चेष्टाएं भी ठीक इसी तरह नि-

ष्फल हो रही हैं । यदि वही गाड़ी पहियेके बल खड़ी करके चलायी जाय तो वह टूटनेसे बच जायगी और आसानीसे चल सकेगी । यही बात हमारे जीवन-निर्वाहके उद्योगोंके विषयमें भी है ।

बाण्डरक साहबकी यही सम्मति है जिससे मैं पूरी तौरसे सहमत हूं । उक्त विषयपर नीचे लिखे अनुसार फिर एकबार मैं विचार करता हू । ऐसा भी एक समय था जब मनुष्य मनुष्यको खाया करते थे। जब यह बात असम्भव हो गयी तब मनुष्योंमें एकताका विवेक बढ़ा और यह एक दूसरेको खाने-वाली प्रथा बिल्कुल बन्द हो गयी । फिर वह समय आया जब लोग दुबले मनुष्योंसे जबरस्ती काम लेने और उन्हें अपने दास या गुलाम बनाने लगे। परन्तु जब मनुष्योंका ज्ञान और बढ़ा तब यह प्रथा भी बन्द हो गयी । यद्यपि जबरदस्ती या अन्यायसे आज भी छिपे छिपे दुबले मनुष्योंसे काम लिया जाता है तथापि उसका पहिला स्वरूप अब नष्ट हो चुका है । अब लोग खुल्लखुल्ला एक दूसरेके परिश्रमसे लाभ जबरदस्ती या अन्यायसे नहीं उठा सकते। वर्तमान कालमें जबरदस्ती या अन्यायका स्वरूप केवल यही रह गया है कि लोग दूसरोंकी आवश्यकतासे लाभ उठाकर उन्हें लूटते हैं ।

बाण्डरफ साहबके मतसे वह समय भी अब निकट है अब मानवजातिमें एकताका विचार इतना बढ़ जायगा कि असमर्थ दुर्बल और मनुष्योंको सतानेवाली ठंढकसे, भूखसे और उनकी और और आवश्यकताओंसे लोगोंको लाभ उठाना दुर्लभ हो जायगा, और जब लोग इस 'कमाखाने'के नियमको अपना धार्मिक कर्त्तव्य कबूल करेंगे और आरम्भिक आवश्य-

कताकी वस्तुओंको विना बेचे, आवश्यकता पड़नेपर असहाय तथा असमर्थ मनुष्योंकी रोटी और कपड़ेसे सहायता करते हुए अपने इस आवश्यक तथा पवित्र कर्त्तव्यका पालन करेंगे।

इस बातको दूसरी तरह सिद्ध करनेके लिये बाण्डरफ साहबके बतलाये हुए नियमपर मैं अब इस प्रकार विचार करता हूं। हम लोग प्राय. लोगोंको केवल निषेधात्मक नियम या आदेशोंकी अयथेष्टतापर—अर्थात् उन नियमोंकी अयथेष्टतापर जो हमलोगोंको बताते हैं कि यह काम न करना चाहिये—विचार करते हुए देखते हैं। लोग कहा करते हैं कि हमको उन विधानात्मक नियम या आदेशोंकी आवश्यकता है जो यह बतावें कि हमें क्या करना चाहिये। ईसामसीहके पांच आदेश हैं।

(१) किसीको तुच्छ या मूर्ख न समझना चाहिये और किसीपर क्रोध न करना चाहिये; (२) स्त्री-पुरुष-भोगको विलास न समझना चाहिये, और जिस पति या स्त्रीसे एकबार सम्भोग हो चुका हो उस पति या स्त्रीका परस्पर कभी त्याग न करना चाहिये; (३) कभी सौगन्ध न खानी चाहिये और किसीकी अधीनता स्वीकार न करनी चाहिये; (४) हानि और अत्याचारोंको सहन करलेना चाहिये और उनका प्रतिकार अन्याय तथा अत्याचारहीसे न करना चाहिये (५) किसीको अपना शत्रु न समझना चाहिये किन्तु शत्रुके साथ भी मित्रताका बरताव रखना चाहिये। लोग कहते हैं कि ईसामसीहके ये पाच आदेश हम लोगोंको जो न करना चाहिये वही केवल बताते हैं, परन्तु हमलोगोंको जो करना चाहिये

सो बतानेवाले ईसामसीहके कोई आदेश या नियम नहीं है।

वास्तवमें यह बात आश्चर्यजनक हो सकती है कि ईसा-मसीहके उपदेशोंमें ऐसे विधानात्मक आदेश ही नहीं हैं जो यह बता सके कि हमको क्या करना चाहिये। परन्तु, यह बात केवल उन्हीं लोगोंको आश्चर्यजनक प्रतीत होगी जो ईसाम-सीहके मुख्य उपदेशपर विश्वास नहीं करते; जिसमें, केवल ये पाच आदेश ही नहीं किन्तु सत्यकी शिक्षा दी गयी है।

'ईसामसीहका बताया हुआ सत्यका उपदेश नियमों या आदेशोंमे नहीं है, किन्तु वह केवल एक ही वस्तुमे है; और वह वस्तु जीवनका उद्देश्य है। जीवनका उद्देश्य यह है कि मनुष्यको अपने जीवन तथा जीवन-सौभाग्यको निजके सुखकी ओर न लगाना चाहिये, जैसा कि लोग प्रायः किया करते हैं— ईश्वर और मनुष्यकी सेवामें अपना सर्वस्व अर्पण कर देना ही मनुष्य जीवनका उद्देश्य होना चाहिये।

उपरोक्त नियम न तो कोई ऐसी आज्ञा ही है कि जिसका पालन फल-प्राप्तिके उद्देश्यसे किया जाय-और न यह कोई ऐसा गूढ वाक्य ही है कि जिसका रहस्य मनुष्यकी समझके बाहर है; किन्तु जीवनके एक नियमका यह स्पष्टार्थ है जो पहिले अस्पष्ट था। इस नियमसे इस अर्थका बोध होता है कि मनुष्यका जीवन सुखकर तभी हो सकता है जब उसकी यथार्थ-ताको वह भलीभाति समझले। इसीलिये ईसामसीहने अपने सब विधानात्मक आदेशोंका भाव इसी एक बातमे रख दिया है कि 'तू ईश्वर और प्राणिमात्रपर प्रेम कर।'

उपर्युक्त आदेशका अब इससे अधिकतर स्पष्टार्थ होना

असम्भव है । यह एक ही है क्योंकि इसमें सब मिले हुए हैं । ईसामसीहके नियम और आदेश, 'ज्यू' जाति या यहूदी और बौद्ध लोगोंके नियमों तथा आदेशोंके समान. मनुष्यकी केवल वही दशा बताते है, जिसमे सासारिक कार्य्योंका पाश मनुष्यको उसके जीवनके सत्यार्थबोधसे अलग रखता है । और इसीलिये दूसरे दूसरे बहुतसे नियम और बहुतसे आदेश हो सकते है, परन्तु जीवनका विधानात्मक उपदेश—या जीवनमे जो जो कार्य करने चाहिये उनका उपदेश—केवल एक ही होना चाहिये, और एक ही हो सकता है ।

हर एक मनुष्यके जीवनको एक तरहकी गति ही कहना चाहिये । चाहे उसकी इच्छा हो या न हो, वह चलता, फिरता और अपना मार्गक्रमण करता रहता है । ईसामसीह मनुष्यको मार्ग दिखाता है; और साथ ही साथ उन मार्गोंको भी दिखा देता है, जो मनुष्यको सत्य मार्गसे परावृत्त करते हैं । मनुष्यको सच्चे पथपर लानेवाली उसकी बहुत सी सूचनाएं है और इन्ही सूचनाओंको हम उसके आदेश कहते है ।

ईसामसीहके ऐसे पॉच आदेश है, और इन पांच आदेशोमे अबतक एक भी नया आदेश नहीं जोड़ा गया है । परन्तु रास्ता बतलानेवाली केवल एक ही दिशा दिखलायी गयी है; क्योंकि कोई एक दिशा दिखलानेवाली केवल एक ही सीधी लकीर हो सकती है ।

इसलिये ईसामसीहके उपदेशोंमें केवल निषेधात्मक ही आदेश है और विधाचात्मक आदेश नाममात्रको भी नही है, यह विचार उन्ही लोगोको सत्य मालूम हो सकता है जो उसके

उपदेशकी यथार्थताको—ईसामसीहकी बताई हुई सच्चे जीवन-मार्गकी दिशाको—भलीभांति नहीं समझते और न उसपर विश्वास ही करते है। ईसामसीहके दिखाये हुए सच्चे जीवन-मार्गपर विश्वास करनेवाले लोगोको उसके उपदेशोंमें विधानात्मक आदेशोके खोजनेकी आवश्यकता ही न पड़ेगी। सच्चे जीवन-मार्गके उपदेशसे होनेवाले सब कार्योंका—चाहे वे भिन्न भिन्न ही क्यों न हों—बहुत स्पष्टताके साथ वर्णन किया गया है।

ईसामसीहके मतानुसार उक्त जीवन—मार्गपर विश्वास करनवाले लोग बहते हुए पानीके एक बड़े झरनेके समान होते है। उनके सब कार्य पानीके बहावकी तरह चलते हैं। जैसे किसी बहते हुए झरनेका पानी बिना किसी तरहकी रुकावटका विचार किये जिधर चाहे उधर बह निकलता है, वैसे ही उक्त उपदेशपर विश्वास करनेवाला मनुष्य बिना किसी तरहकी रुकावट या बाधापर विचार किये अपना मार्ग-क्रमण किये जाता है। ईसामसीहके उपदेशोंको माननेवाला मनुष्य विधानात्मक आदेशोंके विषयमे वही पूछ सकता है जो किसी झरनेका पानी जमीनसे उछल कर (अपना रास्ता) पूछ सकता है। झरना भूमि, घास, पेड़, पशु, पक्षी और मनुष्योंको पानी देते हुए बहता है, और ईसामसीहके उपदेशपर विश्वास करनेवाले लोग भी इसी प्रकार अपने अपने कार्य किया करते है।

ईसामसीहके उपदेशपर विश्वास करनेवाला मनुष्य यह कभी नहीं पूछेगा कि, उसे क्या करना चाहिये। ईश्वर-भक्ति

तथा मानव-प्रेम, जो मनुष्यके जीवन-मार्गके निदर्शक हैं, मनुष्यको इस विषयमें अवश्य ही सूचित करेंगे कि उसे क्या करना उचित है और पहिले कौन कार्य करना चाहिये और फिर कौनसा। इसमें सन्देह नहीं कि ईसामसीहके उपदेशोंसे यह भाव साफ झलकता है कि भूखे मनुष्यको खिलाना, प्यासेका पिलाना, नङ्गे बदनवालेको कपड़ा पहिनाना और असहाय तथा कैदियोंकी सहायता करना, ये सब, प्रेम और भक्तिके प्रथम और अत्यन्त आवश्यक कार्य हैं। हमारी बुद्धि, विवेक और ज्ञान, हमारे भाइयोंपर दैवी कोपके कारण आनेवाले सङ्कट और मृत्युसे उनकी रक्षा करनेके लिये हमे मजबूर करते हैं। तात्पर्य, मनुष्यके जीवनके लिये आवश्यक परिश्रमका कुछ बोझ हमें भी अपने सिर उठाना चाहिये। अर्थात् हम लोगोंको खेतोंपर अनाज पैदा करनेके लिये सब तरहका छोटा मोटा परिश्रमका कार्य करना चाहिये।

जिस प्रकार कोई झरना या नाला यह नहीं पूछता कि उसे—(जमीनके ऊपर) घास और पेड़ोंकी पत्तियोंपर पानी छिड़कते हुए बहना चाहिये या (जमीनके नीचे) भूमिमे घास तथा पेड़ोंकी जड़ोंको पानीमे तर करते हुए बहना चाहिये, उसी प्रकार सच्चे उपदेशोंमे विश्वास करनेवाला मनुष्य भी यह बात नहीं पूछ सकता कि, उसे कौनसा कार्य पहिले करना चाहिये—लोगोंको पहिले शिक्षा देनी चाहिये या उनकी रक्षा करनी चाहिये; उन्हे खुश रखना चाहिये या उन्हे उनके जीवनका सुख दिलाना चाहिये, अथवा आवश्यक वस्तुओंके अभावके कारण उनके होनेवाले सर्वनाशसे उनकी रक्षा

करना चाहिये ? और जिस प्रकार किसी झरने या नालका पानी ज़मीनकी सतहपरसे बहते हुए तालाब या तालको भर देता है और मनुष्य तथा पशुओंको पानी पिलाता है, परन्तु सबसे पहिले वह भूमिको तर कर देता है, इसी प्रकार सत्योपदेशको माननेवाले और उसपर विश्वास करनेवाले लोग, असहाय तथा असमर्थ लोगोंकी पहिली आवश्यकता-ओंकी पूर्त्ति पहिले करते है—और फिर और और कार्य किया करते है—अर्थात् पहिले उन्हे खिलाते पिलाते और आवश्यक वस्तुओंका अभाव रहनेके कारण उनपर आनेवाले संकटोंसे उनकी रक्षा करते हैं। और उनके उपयोगी और और कार्य फिर करते है। सत्य और प्रेमके उपदेशोंको माननेवाला मनुष्य—केवल शब्दोंको ही नहीं किन्तु उनके अनुसार कार्य करनेवाला मनुष्य—अपने प्रथम कर्त्तव्यके पालनमें भूल कभी नहीं कर सकता। जो मनुष्य अपने जीवनको परोपकारके लिये समझता है वह उन लोगोंके समान अपने कर्त्तव्यके पालनमे ऐसी भयानक भूल कभी नहीं कर सकता कि जो लोग तोपे ढालकर, सुन्दर सुन्दर आभूष-ण बनवाकर या बेला अथवा पियानो बजाकर भूखे और नङ्गे मनुष्योंकी सेवा करना चाहते हो यानी गुलछर्रे उड़ाकर जो दूसरोंके कष्टोंको दूर करनेकी कुचेष्टा करते हो !

सच्चा प्रेम, मूर्खता और बदहाशीके काम नही करा सकता।

यदि किसी मनुष्यसे आपका सच्चा प्रेम है और वह भूखो मर रहा है तो उसके कष्टोंको दूर करनेके लिये उसके सामने जाकर आप उपन्यास अथवा नाटक कभी नही पढ़ सकते।

अथवा जिसे ओढ़नेके लिये एक फटा कपड़ा नहीं उसके कानोंमें बहुमूल्य बालियाँ पहिनाकर उसके कष्टोंको आप कभी नहीं दूर कर सकते। उसी प्रकार मानवजातिसे जिसका सच्चा प्रेम है वह गरीबोंको विना अन्न-वस्त्रके भूखों छोड़कर धनी मनुष्योंके दिल बहलानेमें कभी मगन नहीं रह सकता।

सच्चा प्रेम—केवल शब्दोंसे प्रकाशित होनेवाला नहीं किन्तु कार्य्योंमें प्रकट होनेवाला प्रेम—मूर्खताके काम कभी नहीं कर सकता। सच्चे प्रेमसे ही सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है।

इसीलिये सच्चा प्रेम करनेवाला मनुष्य अपने कर्त्तव्य-को कभी नहीं भूल सकता। वह अवश्य ही वही कार्य पहिले करेगा जो मानव-प्रेमके योग्य हो—अर्थात् वह वही कार्य पहिले करेगा जिससे भूख तथा ठंढकसे या अधिक परिश्रम करनेसे मरनेवाले मनुष्योंकी रक्षा हो सके।

जो स्वयं अपनेको और दूसरोंको धोखा देना चाहते हैं, वे ही उन लोगोंकी सहायता करनेसे अलग रह सकते हैं जो अनेक विपत्तियोंसे पीड़ित रहते हैं; और उनपर और और कामोंका बोझा लादते हुए स्वयं अपनेको तथा अपनी आंखोंके सामने भूखों या अधिक परिश्रम करनेसे मरनेवाले मनुष्योंको इस बातका विश्वास दिला सकते हैं कि यह—अधिक परिश्रम कराना—उनके लिये उनकी रक्षाका एक उपयुक्त मार्ग है।

कोई सच्चे हृदयका या निष्कपट मनुष्य, जो परोपकार-में ही अपने जीवनका सार्थक्य समझता है, भूखों और अधिक परिश्रम करनेसे मरनेवाले मनुष्योंसे और भी अधिक परिश्रम कराना उनके लिये उपयोगी कभी नहीं बतायेगा।

और कदाचित वह ऐसा कह भी देगा, तो उसकी विवेक बुद्धि इसका समर्थन न करेगी । और अन्तमे उसे परिश्रमके कार्योंका सब श्रेणीके मनुष्योंमें यथाविभाग बाट देनेके मतसे सहमत होना पड़ेगा । 'कनफ्युशस' से 'माहम्मद' तकके उपदेशोंमे, जिनमे मानव जातिके उपयोगी सच्चा ज्ञान भरा हुआ है, केवल एक ही बात पायी जाती है, (और ईञ्जीलमे तो इस बातपर विशेष जोर दिया गया है) कि पारिश्रमिक कार्योंका यथाविभाग करनेके सिद्धान्तके अनुसार परोपकारके कार्योंको न करना चाहिये, किन्तु बिलकुल साधारण, स्वाभाविक और अत्यावश्यक मार्गसे परोपकार करना चाहिये, अर्थात् दीन दुखिये, कैदी, भूखे और अनाथ तथा असमर्थ मनुष्योंपर उपकार करना चाहिये । दीन दुखियोंकी, कैदियोंकी, और भूखे तथा असमर्थ मनुष्योंकी सहायता तुरन्त करनी चाहिये, क्योंकि ये दीन दुखिये कैदी, भूखे और नङ्गे मनुष्य कुछ कालतक उसी दशामे जीवित नहीं रह सकते—सहायता न मिलनेसे भूख और जाड़ेके मारे शीघ्र ही मर जाते हैं ।

परोपकार करना जिसके जीवनका उद्देश्य है और सत्यके उपदेशमें जिसका पूर्ण विश्वास है, उसे ईञ्जीलके आरम्भसे ही दिये हुए मानव जीवनके पहिले नियम (भौंके पसीनेसे अपनी रोटी कमा खा')—की यथार्थता मालूम हो जायगी, जिसे बॉण्डरफ साहबने सर्वप्रथम और एक विधानात्मक नियम बताया है ।

वास्तवमे यह नियम उन्हीं लोगोंके लिये विधानात्मक

है जो ईसामसीहके बताये हुए जीवनोद्देश्यको नहीं मानते। लोग, ईसामसीहके पहिले इस नियमको ऐसा ही समझते थे और अब ईसामसीहके उपदेशोंको न माननेवाले लोग भी इसे ऐसा ही समझते हैं। उपरोक्त नियमसे मतलब यही है कि हर एक मनुष्यको, इञ्जिलमे बताये हुए और अपने सद्सद्विवेक बुद्धिके बताये हुए ईश्वरी नियमके अनुसार अपने परिश्रमसे अपनी रोटी कमा कर खाना चाहिये। यह नियम विधानात्मक था और यह इसी तरह रहेगा जबतक कि मनुष्यपर उसके जीवनोद्देश्यकी यथार्थता सत्यके उपदेशसे प्रकट न हो जायगी।

ईसामसीहके बताये हुए जीवनके उच्च उद्देश्यकी दृष्टिसे उपरोक्त नियम अर्थात् 'कमा खाना,' उसके बताये हुए एक मात्र विधानात्मक उपदेशमें—अर्थात्, 'ईश्वर और प्राणि मात्रपर प्रेम कर' इस उपदेश मे—उसी सत्य भावसे वास करता है जितना कि वह प्राचीन कालमे सत्य माना जाता था; और उसी जीवनके उच्च उद्देश्यकी दृष्टिसे अब इसे विधानात्मक नहीं, किन्तु निषेधात्मक ही मानना चाहिये। ईसाई धर्मकी दृष्टिसे यह नियम प्राचीन कालके छल कपटसे हमे सावधान करता है तथा यह बताता है कि सच्चे जीवन-मार्गसे न हटनेके लिये हमे किन किन बातोंको छोड़ देना अत्यावश्यक है।

प्राचीन धर्मग्रन्थ (Old Testament)—को माननेवाले, जो इस सत्यके उपदेशपर विश्वास नहीं करते, इस नियमका यह अर्थ करते हैं, "शरीरसे पसीना बहाकर

अपनी रोटी कमा खा ” । परन्तु ख्रिश्चियन लोग अर्थात् ईसा मसीके नूतन आदेशोंको माननेवाले इस नियमका निषेधात्मक अर्थ निकालते हैं । इनके मतसे इस नियमका यह अर्थ है, “इस बातका सम्भवनीय मत समझो कि दूसरोंके परिश्रमसे दूसरोंपर उपकार हो सकता है; और अपने उद्योगसे अपना ही स्वार्थ मत बना लो ” ।

ईसाइयोंके मतसे यह नियम प्राचीन-कालके उस भयानक लोभसे सावधान करता है जिसके कारण मनुष्यको अनेक आपत्तियां झेलनी पड़ती हैं । लोभका परिणाम भयानक ही है और इतने प्राचीन कालसे इसका अस्तित्व चला आ रहा है कि यह बात मुश्किलसे मानी जा सकती है कि 'लोभ करना मनुष्यकी प्रकृतिमें ही नहीं है; किन्तु एक तरहका छल कपट है । इसी लोभके निवारणार्थ बाण्डरफ साहबने उपर्युक्त उपदेश हमें दिया है । क्या प्राचीन धर्मग्रन्थपर (Old Testament) विश्वास करनेवाले, क्या नूतन धर्मग्रन्थपर (Gospels) विश्वास करनेवाले और क्या किसी धर्म ग्रन्थको न मान कर स्वयं अपनी बुद्धिसे ही काम करनेवाले—हर तरहके और हर सम्प्रदायके मनुष्योंके लिये यह नियम अत्यावश्यक तथा उपयोगी है । और साधारण बुद्धिका मनुष्य भी इसे समझ सकता है ।

उपर्युक्त बातोंकी सत्यताको प्रमाणित करनेके लिये और इनके विरुद्ध उठनेवाले विचित्र तर्क-कुतर्कोंका खण्डन करनेके लिये, मैं बहुत कुछ लिख सकता हूं और लिखूंगा । हम लोग जानते हैं कि हम लोगोंको दोष दिया जाता है और

इसलिये सदा ही इन दोषोंको गुण सिद्ध करनेके लिये तैयार रहते हैं। और यद्यपि मैं इस विषयमें बहुत कुछ लिखूं और मेरा लिखना बड़ा सुन्दर क्यों न हो तथा न्यायशास्त्रसे उसका तर्क अक्षर अक्षर अखण्डनीय भी क्यो न हो तथापि मैं अपने प्रिय पाठकोंसे आग्रहपूर्वक निवेदन करता हूं कि जबतक उनका हृदय मेरे हृदयसे मिल न जाय और जबतक वे मेरे कथनपर भली भांति विचार करके उसकी सत्यताको खूब अच्छी तरह परख न लें और उनकी बुद्धि हार न जाय तबतक वे मेरी बातोंपर कभी विश्वास न करें।

इसीलिये, पाठकगण! मै आपसे निवेदन करता हूं कि थोड़ी देरके लिये अपनी बुद्धिकी गति रोक रखिये और वादविवाद तथा अपने सिद्धान्तोंको एक ओर रख केवल अपने हृदयसे पूछिये। आप कैसे ही असाधारण मनुष्य क्यों न हों, आपपर ईश्वरकी पूर्ण कृपा क्यों न हो, आप कैसे ही धनवान क्यों न हों और आप कैसे ही दयालू क्यों न हों, आपके भोजन करते समय या चाय पीते समय या राजकीय, सामाजिक, वैद्यकीय अथवा शिक्षा, विज्ञान, पठन, पाठन सम्बन्धी कार्य करते समय आप यदि अपने द्वारपर किसी भूख या ढढकसे पीडित दीन दुर्बल मनुष्यको मागते देखें या सुनें तो आपके हृदयमें विना किसी तरहकी हलचल हुए उक्त कार्योंमेसे किसी कार्यको क्या आप आरामके साथ कर सकते हैं? नहीं, ऐसे अवसरपर कोई कार्य आरामके साथ होना कभी सम्भव नहीं, तिसपर भी ऐसे लोगोंकी कमी नहीं है। यदि वे आपके द्वारपर नहीं हैं तो आप-

के द्वारसे दस गज या दस मील दूर हैं। परन्तु हैं अवश्य, और हर जगह हैं और हर समय रहते हैं, और इस बातको आप अच्छी तरह जानते हैं।

अगर इस बातको आप अच्छी तरहसे जानते हैं और उसकी ओर दुर्लक्ष्य नहीं कर सकते तो आपको सच्चा सुख, आनन्द तथा शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। उनकी ओर दुर्लक्ष्य करनेके लिये या अपने द्वारपर उन्हें आते न देखनेके लिये आप उन्हे वहासे भगा सकते हैं या अपने द्वारपर न आनेकी उन्हें ताकीद कर सकते हैं या स्वय ही ऐसी जगह जा सकते हैं जहा वे न हो, परन्तु वे हर जगह है।

और जो आपको ऐसा स्थान मिल भी जाय जहा उनको आप न देख सके, तोभी आप सत्यतासे अपनी जान नहीं बचा सकते। फिर आप कौनसा मार्ग स्वीकार करेगे?

इन बातोको आप जानते हैं और सत्यका उपदेश भी आपको यही सब बाते बतलाता है।

जाइये उसी कनिष्ठ मार्गपर जाइये, पर याद रखिये कि वह कनिष्ठ नहीं किन्तु उच्चतम मार्ग है। जाइये उन्हीं लोगोंमें मिल जाइये, जो भूखोंको रोटी और नङ्गोंको कपड़ा देते हैं। इसमें डरनेकी कोई बात नहीं है। इसका परिणाम किसी प्रकार हानिकारक न होगा। किन्तु हर हालतमें लाभदायक ही होगा। जाइये, उस कामके करनेमें प्रवृत्त हो जाइये और अपने दुर्बल हाथोंको उसी मुख्य कार्यमें 'कमा खानेमे' लगा दीजिये जिससे भूखों और नङ्गोंको अन्नवस्त्र प्राप्त हो। यह कार्य करनेसे आपको यही मालूम

होगा कि आप सुरक्षित हैं, सुखी हैं, स्वतन्त्र हैं अपने पैरोंके बल खड़े हैं और अपने कर्तव्यका पालन कर रहे हैं। आपको यह भी मालूम होगा कि आप सम्पूर्ण और पवित्र सुखका उपभोग कर रहे हैं, जो आपको और कहीं नहीं प्राप्त हो सकता।

उक्त कार्य करनेसे आपको वह सुख प्राप्त होगा जिससे आप अभी बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। आप, अपने भाइयों-को—सशक्त और सीधे स्वभावके मनुष्योंको—पहिचानियेगा जिन्होंने आपको आजतक आपसे दूर रह कर खिलाया है। आपको उनमें यह बात पाकर आश्चर्य होगा कि जिन गुणोंको आपने आजतक स्वप्नमें भी नहीं देखा, वे गुण उनमें वास करते है। आपके साथ वे इतने नम्र तथा मित्र भावसे व्यवहार करेंगे कि जिस व्यवहारके लिए आप अपनेको पात्र न समझेंगे।

उनके परिश्रमपर अपना जीवन निर्वाह करते हुए और सदा उन्हें तुच्छ समझते हुए जिस कार्यको आप घृणित और तुच्छ दृष्टिसे देखा करते थे, उसी कार्यको फिर आप दया, कृतज्ञता और आदरकी दृष्टिसे देखने लगेंगे, जब कि सदा उनमें सम्मिलित होकर अपनको पहिचान लेंगे और अपने दुर्बल हाथोंसे उनकी सहायता करनेका यत्न करेंगे।

फिर आपको यह बात भली भांति विदित हो जायगी कि, समुद्रमें डूब जानेके भयमें जिस टापूका आपने आश्रय लिया है और जिसको आप अपने लिये एक सुरक्षित स्थान समझ रहे हैं वह वास्तवमें दलदल है जिसमें आप धँसे जा रहे हैं, और जिस समुद्रसे आप डरते हैं वह एक सुखी भूमि है,

जिसपर आप शान्ति तथा सुखके साथ चल फिर सकेंगे। फिर आप उस कपट मार्गको, जिसको आपने अपनी ही इच्छासे स्वीकार नहीं किया है, किन्तु उसको स्वीकार करनेके लिये आप दूसरोंसे प्रवृत्त कराये गये हैं, छोड़कर सत्यकी ओर बढ़ेंगे और परमात्माकी आज्ञाका ठीक ठीक पालन कर सकेंगे। *

---

* यह लेख महात्मा टॉलस्टॉयने सन् १८८८ ई० में अपनी मातृ-भाषामें लिखा था। उसका अनुवाद अंग्रेज़ी तथा फ्रेंच भाषाओंमें हो चुका है। अंग्रेजी अनुवादका यह हिन्दीमे रूपान्तर है।

विवेचकबुद्धि और धर्म।

(पृच्छकके प्रति महात्मा टालस्टायका पत्र ।)
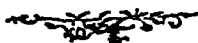
तुम्हारे प्रश्न ये हैः—

(१) क्या आन्तरिक जीवन सम्बन्धी प्राप्त किया हुआ तत्वज्ञान साधारण बुद्धिके मनुष्योंपर शब्दों द्वारा प्रकट करना चाहिये ?

(२) क्या आन्तरिक जीवनका पूरा पूरा रहस्य समझनेकी चेष्टा करनेसे कोई लाभ है ?

(३) मनकी घबराहट या भ्रमके समयमें हम किसी बातका जो निर्णय कर लेते हैं उस निर्णयके विषयमें यह कैसे जाना जा सकता है कि वह विवेकबुद्धिका किया हुआ है या कमजोरीसे बिगड़े हुए मस्तिष्कसे निकला है ?

इन तीनो प्रश्नोंका समावेश एक ही प्रश्नमें—दूसरेमे हो सकता है; क्योंकि यदि आन्तरिक जीवनका पूरा और सच्चा ज्ञान प्राप्त करना हमारे लिये उचित न हो तो यह भी उचित नहीं है और सम्भव भी नहीं है कि हम वह ज्ञान प्राप्त करके शब्दों द्वारा प्रकट करें। मनकी भ्रमावस्थामें विवेक और अविवेकमें अन्तर दिखाने वाली कोई बात नहीं रह सकती। पर यदि यह उचित है कि हम अपनी मानसिक शक्तिके अनुसार आन्तरिक जीवनको समझें तो जो कुछ हम समझ सके उसे प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

मनका विकृत अवस्थामें हमें इसी सत्य ज्ञानका सहारा रहेगा। इसलिये मैं तुम्हारे मुख्य प्रश्नके उत्तरमें 'हाँ' कहता हू अर्थात् प्रत्येक मनुष्यको अपने जीवनका उद्देश्य पूरा करने और सच्चा सुख प्राप्त करनेके लिये मनकी सारी शक्तियोंको भिड़ाकर उस धर्ममूलको अन्तर्दृष्टिसे देख लेना चाहिये जो उसका सहारा है। तात्पर्य यह कि उसे अपना जीवित-कर्तव्य समझ लेना चाहिये।

नहर खोदनेवाले मजदूरोंको, समयके हिसाबसे नहीं, जमीनकी खुदाईके हिसाबसे मजदूरी दी जाती है। इनमें बहुतेरे मजदूर ऐसे हैं जो इस बातसे असन्तुष्ट हैं और जिनका विश्वास है कि गणित शास्त्रके अनुसार जो गणना की जाती है वह धोखा देनेवाली है। उसपर विश्वास न करना चाहिये। गणित न जाननेसे ऐसा होता हो या हिसाब लगानेवाले ही मजदूरोंको जान बूझकर या बेजाने धोखा देते हो, चाहे जो कुछ हो पर यह अवश्य सच है कि मजदूरोंने गणितको झूठा मान लिया है। वे इस विश्वास-को स्वतः सिद्ध सत्य मानते हैं और इसे सिद्ध करनेकी आवश्यकता नहीं समझते। इसी प्रकार कुछ लोगोंने, जिन्हे मैं अधार्मिक कह सकता हूं, अपनी यह राय कायम कर ली है कि धर्म सम्बन्धी प्रश्न विचार या तर्कसे नहीं हल हो सकते; इन प्रश्नोंपर विचार करना ही भूलोंका आरम्भ है और विचारदृष्टिसे धर्म सम्बन्धी प्रश्नोंको देखना मूर्खता है।

इस बातका जिक्र करनेका कारण है। तुमने जो सन्देह किया है कि मनुष्यको सत्यका ज्ञान प्राप्त करना चाहिये या

नहीं—उस सन्देहका कारण उन मनुष्योंकी तर्कना है जो ऐसे प्रश्नोंपर विचार करना बुरा समझते हैं। यह विचार उतना विचित्र और उतना ही झूठ है जितना यह कि, गणितके प्रश्न गणनासे नहीं हल हो सकते।

मनुष्यने परमात्माहीसे ऐसा साधन प्राप्त किया है कि जिससे वह निजको और अपने सांसारिक सम्बन्धको जान सकता है। दूसरा साधन उसके पास नहीं है। वह साधन है बुद्धि—तर्क—विचार। पर एकाएक उसे यह बता दिया जाता है कि वह उस बुद्धिसे अपने घरबार, गृहस्थी, राजनीतिक, वैज्ञानिक, कलाकौशल सम्बन्धी बातें जान सकता है, उस बातको नहीं जान सकता जिसके लिये ही प्रधानतः वह बुद्धि उसे दी गयी थी। जिस महत्सत्यपर उसका सारा जीवन अवलम्बित है उसीको समझनेमें मनुष्य अपनी बुद्धि न खर्च करे, किन्तु उस सत्यको बुद्धिके परे समझे, यह बड़े दुःखकी बात है। कोई बात बुद्धिके परे नहीं। लोग कहते हैं "पारमार्थिक बातोंको श्रद्धासे समझो।" पर, स्मरण रहे, बुद्धिका बिना उपयोग किये मनुष्य श्रद्धावान भी नहीं हो सकता। यदि कोई मनुष्य एक बातपर विश्वास करता है और दूसरीपर नहीं करता तो इसका कारण क्या है?—यही न कि, उसकी बुद्धि विश्वास करने या न करनेके लिये उद्युक्त करती है? मनुष्योंको बुद्धिके सहारे न चलनेका उपदेश देना और अँधेरी गुफामें राह ढूढनेवाले मनुष्यको लैम्प गुल करके रोशनीका सहारा छोड़ देनेकी सलाह देना एक ही बात है।

शायद इसपर लोग कहेंगे (जैसा तुमने अपने पत्रमें कहा है) कि सभी मनुष्य अच्छी बुद्धिवाले नहीं होते और सभी अपने विचार प्रकट करनेकी योग्यता नहीं रखते; इसलिये अपने धर्म विचारोंके धुंधले प्रकाशमें भूलकर सकते हैं। इसका उत्तर मैं धर्म पुस्तकके शब्दोंमें ही देता हूं कि, 'बुद्धिमान् जिस बातको नहीं समझते वही बात बच्चे जान लेते हैं।' यह सुभाषित अतिशयोक्ति या असंभाव्य नहीं है।

यह बिलकुल सच है। इस संसारमें प्रत्येक प्राणीके लिये कुछ नियम विहित हैं जिनका पालन उसे अवश्य करना चाहिये। ये नियम जाननेके लिये प्रत्येक प्राणीको उपयुक्त साधन भी दिये गये हैं। हर मनुष्यको परमात्माने बुद्धि दी है। उसी बुद्धिसे वह उन नियमोंको जान सकता है जिनका उसे पालन करना है। नियम उन्हीं लोगोंके पालन करनेसे बना रहता है। जो उनका पालन नहीं करना चाहते; अतएव अपने कर्तव्यसे बचनेके लिये बुद्धिका अधिकार नहीं मानते, सत्यके अन्वेषणके लिये प्राप्त हुई बुद्धिका उपयोग करनेके बदले अन्धश्रद्धासे उन लोगोंके बनाये हुए नियम स्वीकार कर लेते हैं, जिन्होंने बुद्धिको अनधिकारी बताया है उन्हींको उस नियमका ज्ञान नहीं होता।

जिस नियमका पालन मनुष्यको करना है वह इतना सादा है कि प्रत्येक बालक उसे समझ सकता है। हमारे पूर्वजोंने उसे जाना भी था और बताया भी है। अब हमारा काम सिर्फ यह है कि बापदादोंसे जो बातें हम लोग सुनते आये हैं उन्हींको बुद्धिसे सिद्ध करें; फिर चाहे हम उन्हें स्वीकार करें या न करें। हमको उन लोगोंके उपदेशानुसार काम न करना

चाहिये जो नियमका पालन करना नहीं पसन्द करते। पुरानी कथाओंसे बुद्धिको न जांचना चाहिये; किन्तु उलटे बुद्धिसे ही उन कथाओंकी जाँच पड़ताल कर लेनी चाहिये। पुरानी कथाओंमे या पूर्वपुरुषोंसे सुनी हुई बातें झूठ हो सकती हैं; पर बुद्धि तो परमात्माकी दी हुई है—वह झूठ कभी नहीं हो सकती। इसलिये सत्यके समझने और प्रकट करनेके लिये कुछ अद्भुत शक्तियोंकी आवश्यकता नहीं है। पर यह स्मरण रहे कि बुद्धि ही मनुष्यका सबसे बड़ा ईश्वरी या पवित्र गुण नहीं है। वह एक साधनमात्र है जिससे सत्यका ज्ञान प्राप्त होता है।

सत्यके ज्ञान और प्रतिपादनके लिये विशेष गुण या बुद्धिमत्ता आवश्यक नहीं है। असत्यके आविष्कार और प्रतिपादनके लिये ही उसकी आवश्यकता होती है। बुद्धिमे जो बातें आती हैं उन्हें अलग रख कर उनपर विश्वास करना छोड़कर लोग आंख मूंदकर उन बातोंको सत्य मान लेते हैं जो उन्हें सत्य बतायी जाती हैं। वे ऐसी अस्पष्ट, अस्वाभाविक और परस्परविरोधी बातोंको ज़रासे प्रमाणपर स्वीकार कर लेते हैं। ऐसी बातोंको प्रकट करने और उनका परस्पर सम्बन्ध दिखानेके लिये सचमुच ही बड़ी चालाकी और असाधारण बुद्धिमत्ता आवश्यक है। गिरजोंमे धर्मकी शिक्षा पाये हुए किसी ऐसे मनुष्यकी कल्पना कीजिये जो बचपनमे पढ़ी हुई बातोंको समझकर अपने यथार्थ जीवनसे उनका सम्बन्ध जोड़ना चाहता हो। उसके मस्तिष्कमे कैसी हलचल पैदा होती है जब वह अपनी शिक्षासे पायी हुई श्रद्धामे तरह तरहकी

बातोंको एक मालामें पिराना चाहता है परमेश्वर एक है, वही सृष्टि कर्ता है, वह बड़ा दयालु है; वह बुराई पैदा करता है, लोगोंको अपराधी ठहराता है और छुटकारके लिये दाम मांगता है इत्यादि, और हमलोग स्वयं प्रेम और क्षमाका उपदेश मानते हैं, पर हम ही लोगोंको फांसी चढ़ाते हैं, युद्ध करते हैं, गरीबोंसे उनकी कमाई लेते हैं, इत्यादि।

इन जटिल समस्याओंको हल करनेके लिये या अपनी आत्मासे उन्हें छिपाने के लिये बड़ी योग्यता और बड़ीही बुद्धिमत्ताकी आवश्यकता होती है। परन्तु जीवन-मार्ग या अपना धर्म पूरा पूरा समझनेके लिये विशेष प्रकारकी बुद्धिमत्ता आवश्यक नहीं है—हम लोगोंको केवल इतनीही सावधानता रखनी चाहिये कि हम बुद्धिके विरुद्ध कोई बात न मानें, बुद्धिको न छोड़, धर्मत. अपनी बुद्धिको ठिकाने रख उसीपर विश्वास रखें। जीवन-रहस्य समझनेमें यदि कोई मनुष्य असमर्थ है तो यह न समझना चाहिये कि उसकी बुद्धि असमर्थ है, इससे यही समझना चाहिये कि उसपर बुद्धिविरुद्ध अनेकों बातोंका दृढ़ संस्कार हुआ है और ऐसे संस्कारको मेटना ही चाहिये।

और इसलिये तुम्हारे मूल-प्रश्नका—अर्थात् आन्तरिक जीवनका पूरा पूरा ज्ञान प्राप्त करना चाहिये या नहीं, इसका—उत्तर यह है कि, इस जीवनमें हमारे करनेकी यही तो सबसे आवश्यक और बड़े महत्वकी बात है। यह आवश्यक और महत्वपूर्ण इसलिये है कि, जिस परमात्माने हमें यहां भेजा है उस परमात्माकी इच्छाको पूर्ण करना ही हमारे इस जीवनका उद्देश्य है। परन्तु परमात्माकी इच्छा प्रकट है, किसी असाधारण

दैवघटनासे नहीं, या देवताके लिखे किसी शिलालेखसे नहीं, 'Holy ghost' की सहायतासे तैयार किये किसी सिद्ध पुस्तकसे नहीं, या किसी सिद्ध या सिद्धसमूहकी सिद्धतासे नहीं, किन्तु उन मनुष्योंकी बुद्धिके उपयोगसे वह प्रकट है जो आचार विचारसे परस्परपर सत्यका ज्ञान प्रकट करते हैं और जिनपर वह ज्ञान दिन दिन आप ही आप प्रकट होता जाता है। वह ज्ञान न कभी पूरा हुआ है और न कभी पूरा होगा, किन्तु वह सदा मानवोन्नतिके साथ साथ बढ़ता रहता है। जितने अधिक हम जीवित रहेंगे उतने अधिक हम ईश्वरकी इच्छा को जान सकेंगे; और फलतः हम यह भी जान सकेंगे कि हमें उसकी इच्छा पूरी करनेके लिये क्या क्या करना चाहिये।

इस प्रकार प्रत्येक मनुष्यका (फिर वह निजको अदनेसे अदना क्यों न समझता हो—सबसे छोटे ही सबसे बड़े हैं) यह मुख्य और अति पवित्र कर्तव्य है कि वह यथाशक्ति सत्यज्ञान प्राप्त करे और उसे शब्दों द्वारा प्रकट करे (क्योंकि शब्दोंमें प्रकट करना ही विचारकी स्पष्टताका एक दृढ़ चिह्न है)।

यदि अंशत. भी तुम इस उत्तरसे सन्तुष्ट होगे तो मैं अपनेको कृतार्थ समझूंगा।

शिक्षा सम्बन्धी पत्र।

प्रिय 'श्री', 'क' के साथ बाल-शिक्षाके विषयमें गम्भीर वार्तालाप होनेसे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जिस विषयमें हम दोनोंकी एक ही सम्मति है, परन्तु जिसका सर्वत्र अभाव पाया जाता है, वह यह है कि जहांतक हो सके बालकोंको पुस्तकी विद्या कम सिखलानी चाहिये। बालकोंको अनेक विषयोंका ज्ञान न होना उतना हानिकर नहीं है जितना कि अज्ञान माताओंके द्वारा उन्हें, उन विषयोंकी शिक्षा दिलाना जिनके विषयमें वे स्वयं ही अज्ञान हों। इस तरहकी शिक्षासे बालकोंको शिक्षाका अजीर्ण हो जाता है और अन्तमें इसका परिणाम भी अच्छा नहीं होता। बालक अथवा युवा मनुष्य उसी विषयकी शिक्षा ग्रहण कर सकता है जिसमें उसकी प्रवृत्ति होती है। बिना प्रवृत्ति देखे किसीको शिक्षा देना बहुत बुरा है—इतना बुरा है कि वह मनुष्यके मगजको कमजोर कर देता है। परमात्माकी शपथ, प्यारी 'श्री', यदि तुम इस विषयमें मुझसे सहमत नहीं हो तो मेरी इस बातपर विश्वास करो। यदि यह बड़े भारी महत्वकी बात न होती तो मैं तुम्हें इस विषयमें कभी कुछ भी न लिखता। नहीं तो अपने पतिकी बातोंपर ही विश्वास करो, जिसके इस विषयमें बहुत युक्ति संगत विचार हैं।

परन्तु इसपर सर्वसाधारण उत्तर यह है कि यदि बालकोंको शिक्षा न दी जाय तो उनसे क्या कराया जाय ? क्या उन्हें गांवके लड़कोंके साथ गोली इत्यादि खेलनेके लिये और सब तरहकी बुराइयां सीखनेके लिये छोड़ दिया जाय ? आजकल रूढ़ीके अनुसार यह उत्तर कुछ युक्तिसंगत हो सकता है। परन्तु सचमुच बालकोंको उनके हर प्रकारके जीवनके लिये अभ्यस्त करना आवश्यक है और-उनकी आवश्यकताएं किसी न किसीके द्वारा किसी न किसी तरह बिना स्वयं कोई काम किये पूरी की जाती हैं, यह बात भी उन्हें समझा देना जरूरी है। मेरी रायसे अच्छी शिक्षाकी पहली सीढ़ी यह है कि बालक यह जान ले कि जिन वस्तुओंको वह काममें लाता है, वे आस्मानसे बनी बनायी तैयार होकर नहीं गिरती किन्तु अवश्य ही और और मनुष्योंके परिश्रमसे तैयार की जाती है। बालकके लिये इतना समझ लेना काफी है कि जिन वस्तुओंकी सहायतापर उसका जीवन निर्भर है, वे ऐसे लोगोंके परिश्रमसे तैयार की हुई होती है जो न तो उन्हें जानते हैं न उनपर प्रेम ही करते हैं। और कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें बालक समझ सकता है और उसे समझ लेना चाहिये तथा उस विषयमें शरमिन्दा भी होना चाहिये; जैसे बालक बरतनको काममें लाकर मैला कर देता है परन्तु दाई या मजदूरिन उसे मांज कर साफ करता है; और उसके मैले जूतोंको नौकर पोछ पाछ कर साफ करती है—ये सब काम प्रेमवश नहीं किये जाते, किन्तु औरोंके द्वारा उनके किये जानेका कुछ और ही कारण है जो बालकके मनमें भी कभी नहीं आता। यदि उसे इस बातकी शरम

नहीं मालूम होती कि वह दूसरोके परिमश्रपर अपना जीवन बिता रहा है तो यह उसकी शिक्षाका बहुत ही बुरा आरम्भ है; और इसका उसके समस्त जीवनपर बहुत बुरा असर पड़ता है। इससे बचना बहुत सहज है। मेरी तुमसे प्रार्थना है कि अपने बालकोंको ऐसी शिक्षा दो जिसमें वे उपरोक्त बातोंको समझ लें। उनके सब काम उन्हींसे कराओ, जिन्हें वे कर सकते हैं,—जैसे अपनी जगह साफ कर लेना, अपनी सुराही भर लेना, कपड़े धो लेना, अपना कमरा आप ही सजा लेना, अपने बूट और कपड़े साफ करना और अपने ही हाथोंसे अपनी सेज लगा लेना, इत्यादि। यद्यपि ये काम तुम्हे महत्वके न मालूम होते हों तो भी विश्वास रक्खो कि वे तुम्हारे बालकोंके सुखके लिये फ्रेञ्च भाषा अथवा इतिहास-के ज्ञानकी अपेक्षा सौगुना महत्वके हैं। यह सच है कि इन कामोंके करनेमें एक विशेष कठिनाई यह उपस्थित होती है कि बालक उसी कामको खुशीसे करते है जिसे वे अपनी आखो अपने मावापको करते हुए देखते हैं और इसीलिये मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम इन कामोको स्वयं अपने हाथसे किया करो। इससे दो काम बन जायगे:—एक तो यह कि बहुतसा समय अत्यंत उपयुक्त तथा स्वाभाविक रीतिसे बीत जानेके कारण अन्य विषयोंकी शिक्षा अनायास ही उसे कम मिलेगी; और दूसरे यह कि बालक बिल्कुल सादे मिजाजके बन जायंगे, परिश्रम करेगे तथा अपने बलपर खड़े होना सीख जायंगे। कृपा करके मेरी बात मानकर अपने सब काम अपने हाथोसे करना आरम्भ कर दो। देखो, पहिले ही

मासे तुम्हें आनन्द मिलेगा और तुम्हारे बालकोंको तुमसे भी अधिक। इन कामोंके सिवा यदि तुम खेतोंपर या अपने बगीचेका ही सही, काम करने लगो तो और भी अच्छी बात है, और यह एक तरहका दिलबहलाव भी है। विडेल्म जैसी अच्छी अच्छी पाठशालाएं, जिनके संचालक खेतीके काममें स्वयं योग देते हैं, इस बातकी आवश्यकता स्वीकार करती है कि मनुष्यको अपनी जरूरत आप पूरी कर लेनी चाहिये और अपनी की हुई गन्दगी अपने हाथोंसे साफ करनी चाहिये। विश्वास रक्खो कि विना इन सब बातोंकी शिक्षा दिये बालकोंको नैतिक शिक्षा देना अथवा उन्हें इस बातका ज्ञान कराना कि मनुष्य मात्र बराबर हैं, कभी संभव नहीं। बालक चाहे यह समझ ले कि उसका पिता, चाहे वह कोठीवाल हो या लेनदेनका काम करता हो, चित्रकार हो या ओव्हरसीयर हो, जो स्वयं काम करके अपने कुटुम्बका पोषण करता है, उन कामोंको छोड सकता है जो उसके लाभमें बाधा डालती हैं। परन्तु एक अज्ञान बालक यह कैसे समझ सकता है कि और और लोग उसके लिये वह काम करते हैं जिन्हें उसे स्वयं अपने हाथोंसे करना चाहिये? बालक अपने मनमें यही समझा करता है कि मनुष्य दो श्रेणियोंमें विभक्त हैं—एक मालिक और दूसरे सेवक; मनुष्यमात्रके समान होनेके विषयमें चाहे जिस तरह हम उसे समझानेकी चेष्टा करें, परन्तु सुबहसे शामतक जो जो बातें वह देखता है वे ठीक उसे इस उपदेशके विरुद्ध मालूम होती हैं। केवल यही बात नहीं है कि नीतिके विषयमें किये हुए मौखिक उपदेशोंपर

वह विश्वास करना छोड़ देता है, किन्तु सारे उपदेश उसे बिलकुल झूँठ और बनावटी मालूम होते हैं। इस तरहसे वह अपने मातापिता और गुरुकी बातोंपर विश्वास नहीं करता और न किसी प्रकारकी नीतिकी ही वह आवश्यकता समझता है।

एक विचार और है। मैंने जो कुछ ऊपर कहा है वह होना यदि सम्भव न हो तो इस तरह उनके साथ व्यवहार करना चाहिये जिसमें उन्हें अपना काम अपने हाथोंसे न करनेके कारण असुविधा मालूम हो—जैसे यदि बालक बाहर जानेके अपने कपड़े और जूते आप ही साफ़ न करले तो वह घरसे बाहर ही न निकल सके, यदि वह पानी न लावे और अपनी सुराही साफ न करे तो उसे पीनेके लिये पानी ही न मिलना चाहिये। इन सब बातोंपर लोग हँसेंगे, पर उनके हँसनेपर तुम बिलकुल ध्यान मत दो। संसारमें सैकड़ा नब्बे बुरे काम इसी ख्यालसे किये जाते हैं कि उनका न करना लोग बुरा समझते हैं।